Sept
2024

मासिक

अरफ़ात किरण

रायबरेली

मोहसिन-ए-इन्सानियत का कारनामा

"आप (स०अ०व०) के आने के बाद दुनिया की रुत बदल गई, इन्सानों के मिज़ाज बदल गए, दिलों में ख़ुदा की मुहब्बत का शोला भड़का, ख़ुदा तलबी का ज़ौक़ आम हुआ, इन्सानों को एक नई धुन लग गई। जिस तरह बहार या बरसात के मौसम में ज़मीन में रुएदगी, सूखी टहनियों और पत्तियों में शादाबी और हरियाली पैदा हो जाती है, नई-नई कोंपलें निकलने लगती हैं और दरो दीवार पर सब्ज़ा उगने लगता है। इसी तरह बेसते मुहम्मदी (स०अ०व०) के बाद दिलों में नई हरारत, दिमाग़ों में नया जज़्बा और सरों में नया सौदा समा गया।"

मुफ़क्किरे इस्लाम
हज़रत मौलाना सैय्यद अबुल हसन अली हसनी नदवी (रह०)
(मोहसिन-ए-आलम: ४८)

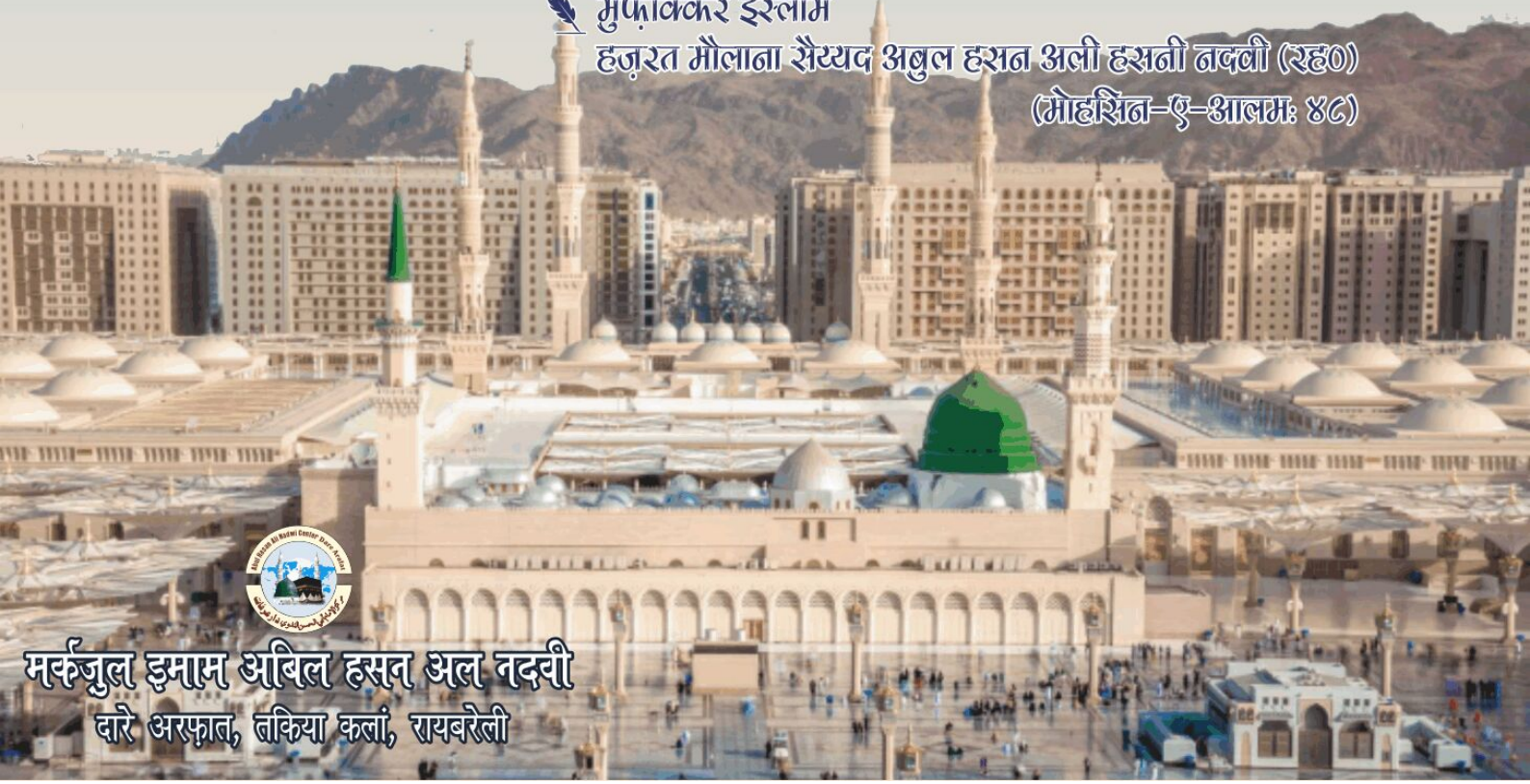

मर्कज़ुल इमाम अबिल हसन अल नदवी
दारे अरफ़ात, तकिया कलां, रायबरेली

दुनिया का सबसे बड़ा इन्सान कौन?

"बैरूत के ईसाई अख़बार "अलवतन" ने १९११ई० में लाखों अरब ईसाईयों के सामने यह सवाल पेश किया था कि दुनिया का सबसे बड़ा इन्सान कौन है? इसके जवाब में एक ईसाई आलिम "दाविर मजाइस" ने लिखा:

दुनिया का सबसे बड़ा इन्सान वह है जिसने दस बरस के मुख़्तसर ज़माने में एक नये मज़हब, एक नये फ़लसफ़े, एक नई शरीअत और एक नये तमद्दुन (सभ्यता) की बुनियाद रखी, जंग का क़ानून बदल दिया और एक नई क़ौम पैदा की और एक नई लम्बी उम्र वाली सल्तनत क़ायम कर दी, लेकिन उन तमाम कारनामों के बावजूद उम्मी और नाख़्वान्दा (ग़ैर पढ़ा–लिखा) था, वह कौन? मुहम्मद बिन अब्दुल्लाह कुरैशी, अरब और इस्लाम का पैग़म्बर। इस पैग़म्बर ने अपनी अज़ीमुश्शान तहरीक (क्रांति) की हर ज़रूरत को ख़ुद ही पूरा कर दिया और अपनी क़ौम और अपने मानने वालों के लिए और उस सल्तनत के लिए जिसको उसने क़ायम किया, तरक़्क़ी और दवाम (स्थायित्व) के असबाब भी ख़ुद मुहैया कर दिये, इस तरह की कुरआन और हदीसों के अन्दर वह तमाम हिदायतें मौजूद हैं जिनकी ज़रूरत एक मुसलमान को उसके दीनी या दुनियावी मामलों में पेश आ सकती है। हज का एक सालाना इज्तिमा (सम्मेलन) फ़र्ज़ क़रार दिया ताकि पूरी दुनिया के मुसलमानों में जो हैसियत रखते हैं एक मरकज़ पर जमा होकर अपने दीनी व क़ौमी मामलात में आपस में मश्वरे कर सकें। अपनी उम्मत पर ज़कात फ़र्ज़ करके क़ौम के ग़रीब तबक़े की हाजत पूरी की। कुरआन की ज़बान को दुनिया की हमेशा बाक़ी रहने वाली और आलमगीर (दुनिया भर में फैली हुई) ज़बान बना दिया कि वह मुसलमान क़ौमों के आपसी पहचान का ज़रिया बन जाए। क़ौम के हर आदमी को तरक़्क़ी का मौक़ा इस तरह दिया कि यह कह दिया कि एक मुसलमान को किसी दूसरे मुसलमान पर सिर्फ़ तक़वे की बिना पर बुज़ुर्गी (तरजीह) हासिल है। इस बिना पर इस्लाम एक अस्ल जम्हूरियत (लोकतन्त्र) बन गया, जिसका रईस (नेता) क़ौम की पसंद से चुना जाता है। मुसलमानों ने एक मुद्दत तक इस उसूल पर अमल किया। यह कहकर कि अरब को अजम पर और अजम को अरब पर कोई फ़ौक़ियत (वरीयता) नहीं, इस्लाम में दाख़िल होना हर शख़्स के लिए आसान कर दिया। ग़ैरमुस्लिमों के लिए इस्लामी मुल्कों में ऐश व आराम और अमन व इत्मिनान से रहने की ज़िम्मेदारी यह कहकर अपने ऊपर ले ली कि तमाम मख़्लूक़ ख़ुदा की औलाद हैं, तो ख़ुदा का सबसे ज़्यादा महबूब वह है जो उसकी औलाद को सबसे ज़्यादा फ़ायदा पहुंचाए। ख़ानदानी, पारिवारिक सुधार भी उसकी नज़र से पोशीदा न रहें, उसने निकाह व विरासत के एहकाम मुक़र्रर किये, औरत का मर्तबा बुलन्द किया, झगड़े और मुक़द्दमों के फ़ैसलों के क़ानून बनाए। बैतुल माल (राजकोष) का निज़ाम क़ायम करके क़ौमी दौलत को बेकार न होने दिया। इल्म की इशाअत (फैलाव) और तालीम उसकी कोशिशों का बड़ा हिस्सा रही। उसने हिकमत (बुद्धिमत्ता) को एक मोमिन का गुमशुदा माल क़रार दिया, इसी वजह से मुसलमानों ने अपनी तरक़्क़ी के ज़माने में हर दरवाज़े से इल्म हासिल किया।

अल्लामा सैय्यद सुलेमान नदवी (रह०)

(सीरतुन्नबी: ४/२७५–२७६)

بِسۡمِ ٱللَّهِ ٱلرَّحۡمَٰنِ ٱلرَّحِيمِ

मासिक

अरफ़ात किरण

रायबरेली

अंक:09 | सितम्बर 2024 ई० | वर्ष:16

सम्पादक

बिलाल अब्दुल हयि हसनी नदवी

सम्पादकीय मण्डल

मुफ़्ती राशिद हुसैन नदवी

अब्दुस्सुबहान नाखुदा नदवी

सह सम्पादक

मो० नफ़ीस ख़ाँ नदवी

मुद्रक

मो० हसन नदवी

अनुवादक

मोहम्मद सैफ़

रसूल-ए-रहमत

अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने फ़रमाया:

"बिलाशुब्हा मैं लानत करने वाला बनाकर नहीं भेजा गया हूं बल्कि बेशक मैं सरापा रहमत बनाकर मबऊस किया गया हूं।"

(सही मुस्लिम: 6778)

E-Mail: markazulimam@gmail.com www.abulhasanalinadwi.org

मर्कज़ुल इमाम अबिल हसन अल-नदवी दारे अरफ़ात, तकिया कलां रायबरेली,यू०पी०.229001

मो० हसन नदवी ने एस० ए० आफसेट प्रिन्टर्स, मस्जिद के पीछे, फाटक अब्दुल्ला खाँ, सब्ज़ी मण्डी, स्टेशन रोड रायबरेली से छपवाकर आफिस अरफ़ात किरण,मर्कज़ुल इमाम अबिल हसन अल-नदवी, दारे अरफ़ात, तकिया कलां रायबरेली से प्रकाशित किया।

Markazul Imam Abil Hasan Al-Nadwi Samiti (Punjab National Bank) A/c No. 6127002100000339 (IFSC: PUNB0612700)

ऐ ख़्वाबगाहे मुस्तफ़ा!

अल्लामा मुहम्मद इक़बाल (रह0)

वह ज़मी है तो, मगर ऐ ख़्वाबगाहे मुस्तफ़ा
दीद है काबा को तेरी हज्जे अकबर के सिवा

ख़ातम हस्ती में तू ताबां है मानिन्दे नगीं
अपनी अज़मत की विलादतगाह थी तेरी ज़मीं

तुझमें राहत उस शंहशाहे मुअज़्ज़म को मिली
जिसके दामन में अमां अक़्वामे आलम को मिली

नाम लेवा जिसके शंहशाहे आलम के हुए
जानशीने क़ैसर के वारिस मसनदे जम के हुए

है अगर क़ौमियत इस्लाम पाबन्द मक़ाम
हिन्द ही बुनियाद है उसकी, न फ़ारस है न शाह

आह यसरब! देस है मुस्लिम का तू, मावा है तू
नुक़्ता जाज़िब तारसुर की शुआओं का है तू

जब तलक बाक़ी है तू दुनिया में बाक़ी हम भी हैं
सुबह है तू इस चमन में गौहर शबनम भी हैं

इस अंक में:

इन्सानियत की मसीहाई.....3
बिलाल अब्दुल हयि हसनी नदवी

सब के नबी (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम).....4
हज़रत मौलाना सैय्यद अबुल हसन अली हसनी नदवी (रह0)

इन्सानियत की सुबह-ए-सादिक़.....5
हज़रत मौलाना सैय्यद मुहम्मद राबे हसनी नदवी

मुअल्लिम-ए-इन्सानियत (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम).....6
मौलाना सैय्यद मुहम्मद वाज़ेह रशीद हसनी नदवी (रह0)

सीरत-ए-नबवी (स0अ0व0) का वसीअ मफ़्हूम.....7
मौलाना जाफ़र मसऊद हसनी नदवी

रसूलुल्लाह (स0अ0व0) की विलादत का वाक़्या.....8
मौलाना अबुल कलाम आज़ाद (रह0)

तक़्वा क्या है?.....9
बिलाल अब्दुल हयि हसनी नदवी

ज़हूर-ए-क़ुदसी.....10
मौलाना अब्दुल माजिद दरियाबादी (रह0)

तलाक़ के चन्द मसाएल.....11
मुफ़्ती राशिद हुसैन नदवी

सीरत-ए-तैय्यबा का पैग़ाम.....13
अब्दुस्सुब्हान नाख़ुदा नदवी

रहमत-ए-आलम (स0अ0व0) और मज़लूमों की मदद.....15
मौलाना ज़ाहिद हुसैन नदवी जमशेदपुरी

मेहसिन-ए-इन्सानियत (स0अ0व0).....17
मुहम्मद अमीन हसनी नदवी

ख़ून के प्यासों को इन्सानियत का मीठा पानी.....18
सैय्यद अब्दुल अली हसनी नदवी

इन्सानियत की मसीहाई

बिलाल अब्दुल हयि हसनी नद्वी

जो लोग दुनिया की तारीख़ (इतिहास) से वाक़िफ़ हैं, वह जानते हैं कि दुनिया के लिए सबसे मुबारक दिन वह था जिस दिन रसूल–ए–इन्सानियत (स0अ0व0) इस दुनिया में तशरीफ़ लाए। लगभग डेढ़ हज़ार साल पहले की दुनिया इन्सानों की दुनिया नज़र नहीं आती, वह कहीं दरिन्दों की दुनिया नज़र आती है, तो कहीं इन्सानों की शक्लों के जानवरों की दुनिया नज़र आती है, उस वक़्त की दो बड़ी हुकूमतें रोमन इम्पायर और पर्शियन इम्पायर जिनका दबदबा था, उनका तमद्दुन (सभ्यता) क्या था? एक सड़ी हुई लाश थी जिसकी बदबू से उस वक़्त की पूरी दुनिया परेशान थी, उन दोनों सभ्य हुकूमतों की तारीख़ देखकर जिस्म के रोंगटे खड़े हो जाते हैं और हैरत होती है कि इन्सान गिरता है तो जानवरों को पीछे छोड़ देता है। उसकी अक़्ल लज़्ज़त पाने के लिए ऐसे–ऐसे ज़ालिमाना तरीक़े अपनाती है जिसकी तरफ़ किसी ऐसे इन्सान का ज़हन भी नहीं जा सकता जिसके पहलू में धड़कता हुआ दिल हो, उस अंधेरी दुनिया में इन्सान भटक रहा था, उसको ज़िन्दगी का सिरा नहीं मिल रहा था और न कहीं उम्मीद की किरन नज़र आ रही थी और लगता था कि शायद दुनिया अपनी तबाही के दहाने (कोने) पर पहुंच चुकी है और इसके पैदा करने वाले ने इसको ख़त्म करने का इरादा फ़रमा लिया है। लेकिन अल्लाह को कुछ और मन्ज़ूर था, दुनिया को अपना नया सफ़र शुरू करना था, उसको तरक़्क़ी के सबसे बुलन्द मेयार तक पहुंचना था और वह इन्सानियत जो शर्मसार खड़ी थी उसका सर फ़ख़्र से बुलन्द होना था, इल्म व फ़न की गुत्थियां सुलझनी थीं और जगह–जगह इल्म की मशालें जलनी थीं, बेबसों और कमज़ोरों को उनका हक़ मिलना था और औरत जो सरेबाज़ार रुस्वा हो रही थी उसको अपना मक़ाम हासिल होना था, दुनिया के जहन्नम कदह को जन्नतकदह में तब्दील होना था कि मक्का की घाटियों से आफ़ताब–ए–नुबूव्वत तुअूल हुआ (निकला) और रहमत–ए–आलम (स0अ0व0) क्या तशरीफ़ लाए बहार आ गई, जो लब मुस्कुराने के लिए तरस गए थे उन पर मुस्कुराहट आ गई, पतझड़ के बाद बहार का दौर आया, बादे समूम (गर्म हवा के झोंके) के बाद बादे नसीम (ठंडी हवा के झोंके) के ऐसे दिलनवाज़ झोंके चले जिन्होंने इन्सानों को ताज़गी बख़्शी, मुर्दा दिलों की मसीहाई की और इन्सानों में इन्सानियत की बहार आ गई।

इल्म की यह ख़ुशबू जो हिजाज़ की मुबारक सरज़मीन से चली तो उसके क्या एशिया, क्या यूरोप और क्या अमरीका, हर एक मुल्क को महकाया और लोगों ने सुकून की सांस ली। मगर उन्हीं इन्सानों में वह दरिन्दा सिफ़त लोग भी थे जिनकी आदत ख़ून चूसने की थी, जिनका काम ही अपनी राहत, लज़्ज़त और इज़्ज़त के लिए दूसरों की इज़्ज़तें लूटना और उनको सताना था, उनको यह अद्ल व इन्साफ़ एक आंख न भाया और पहले दिन से उन्होंने इस आदिलाना निज़ाम और रसूल–ए–रहमत (स0अ0व0) के ख़िलाफ़ तरह–तरह की साज़िशें शुरू कीं, यह सिलसिला पहले दिन से चला और मुख़्तलिफ़ मरहलों से गुज़रता हुआ आज दुनिया के नाम निहाद (तथाकथित) मुल्कों मुतमद्दिन (सभ्य) मुल्कों की शक्ल में मौजूद हैं जिनके पास उसी रोमन और पर्शियन कल्चर की दुहाई है।

इस्लाम ने इस तमद्दुन को जिस तरह तराश–ख़राश कर सजाया था और उसकी गन्दगियां साफ़ की थीं और उसको निखारा था और उसमें तरह–तरह के फूल सजाकर ऐसा हसीन गुलदस्ता दुनिया को दिया था जिसका तसव्वुर उससे पहले दुनिया नहीं कर सकती थी, यह नामनिहाद मुतमद्दिन क़ौमें नहीं चाहतीं कि अद्ल व इन्साफ़ की इस ख़ुशबू को बाक़ी रखा जाए, उनकी चाहत सिर्फ़ यह है कि उनकी ताक़त बाक़ी रहे, उनका सिक्का चलता रहे, इसके लिए क़ौमों की क़ौमें और मुल्क के मुल्क भी तबाह होते चले जाएं, उसकी उनको कोई परवाह नहीं।

आज जो कुछ रसूल–ए–रहमत (स0अ0व0) की ज़ाते अक़दस और आप (स0अ0व0) की मुबारक ज़िन्दगी के ख़िलाफ़ कहा या लिखा जा रहा है, यह उसी कीने का नतीजा है जो उन दरिन्दा सिफ़त इन्सानों में पहले दिन से मौजूद था और आज उसकी तरक़्क़ी याफ़्ता शक्लें हैं जो हमारे सामने आती रहती हैं मगर यह भी एक हक़ीक़त है कि इन्सानों की अक्सरियत अपने अन्दर धड़कता हुआ दिल और इन्सानियत का दर्द रखती है, उसके सामने जब रसूलुल्लाह (स0अ0व0) का नमूना–ए–इन्सानियत पूरी सच्चाई के साथ आता है तो उनके दिलों की कैफ़ियत बदलने लगती है और एक प्यास महसूस होने लगती है जो सिर्फ़ उस्वा–ए–रसूले अकरम (स0अ0व0) के आब–ए–ज़ुलाल (साफ़ पानी) से बुझती है, आज हम मुसलमानों की सबसे बड़ी ज़िम्मेदारी यह है कि हम एक तरफ़ सीरत–ए–तैय्यबा के पैग़ाम को आम करने की कोशिश करें और एक–एक फ़र्द तक उसको पहुंचाएं और ख़ुद उस मुबारक नमूने को सामने रखकर अपनी ज़िन्दगियों को उसके मुताबिक़ करने की कोशिश करें, ताकि इल्म व अमल की दावत दुनिया तक पहुंचे, हक़ीक़त और सच्चाई के जानने वालों को उनकी ग़िज़ा मिल सके और अंधेरी दुनिया में जगह–जगह इल्म व अमल, अद्ल व इन्साफ़ और अमन व अमान की शमा रोशन हो!

सब के नबी

ﷺ

हज़रत मौलाना सैय्यद अबुल हसन अली हसनी नदवी (रह0)

मुहम्मद रसूलुल्लाह (स0अ0व0) ने दुनिया को तीन अनमोल मोती अता किये; सही इल्म, कामिल यक़ीन और नेकी का दिली तक़ाज़ा। दुनिया को न इससे क़ीमती सरमाया मिला, न किसी ने दुनिया पर आप (स0अ0व0) से बढ़कर एहसान किया।

दुनिया के हर इन्सान को फ़ख़्र करना चाहिए कि हमारी इन्सानी नस्ल में एक ऐसा इन्सान पैदा हुआ जिसने इन्सानियत का सर ऊंचा और नाम रोशन हुआ, अगर आप (स0अ0व0) न आते तो दुनिया का नक़्शा क्या होता और हम इन्सानियत की शराफ़त व अज़मत के लिए किसको पेश करते?

मुहम्मद रसूलुल्लाह (स0अ0व0) हर इन्सान के हैं, मुहम्मद (स0अ0व0) से इस दुनिया की रौनक़ और इन्सानी नस्ल की अज़मत हैं, वह किसी क़ौम की मिल्कियत नहीं, उन पर किसी मुल्क का इजारा नहीं, वह पूरी इन्सानियत का सरमाया–ए–फ़ख़्र हैं। क्यों आज किसी मुल्क का इन्सान फ़ख़्र व मसर्रत के साथ यह नहीं कहता कि मेरा उस नस्ल से ताल्लुक़ है जिसमें मुहम्मद (स0अ0व0) जैसा कामिल इन्सान पैदा हुआ।

आज इन्सानों का कौन सा तबक़ा है जिस पर आपका बराहेरास्त या बिलवास्ता (प्रत्यक्ष व अप्रत्यक्ष) एहसान नहीं? क्या मर्दों पर आपका एहसान नहीं कि आपने उनको मर्दान्गी और आदमियत की तालीम दी।

क्या औरतों पर आपका एहसान नहीं कि आपने उनको हुक़ूक़ (अधिकार) बतलाए और उनके लिए हिदायतें और वसीयतें फ़रमाईं। आप (स0अ0व0) ने फ़रमाया कि "जन्नत माओं के क़दमो के नीचे है।"

क्या कमज़ोरों पर आपका एहसान नहीं कि आपने उनकी हिमायत की और फ़रमाया कि "मज़लूम की बद्दुआ से डरो कि उसके और ख़ुदा के दरमियान कोई पर्दा नहीं। ख़ुदा कहता है कि मैं शिकस्ता (टूटे हुए) दिलों के पास हूं।"

क्या ताक़तवरों और हुक्मरानों पर आपका एहसान नहीं कि आपने उनके हुक़ूक़ व फ़राएज़ (अधिकार व कर्तव्य) भी बताए और हदें भी बताईं और इन्साफ़ करने वालों और ख़ुदा से डरने वालों को ख़ुशख़बरी सुनाई कि "इन्साफ़ पसंद बादशाह रहमत के साये में होगा।"

क्या ताजिरों (व्यापारियों) पर आपका एहसान नहीं कि आपने तिजारत की फ़ज़ीलत और इस पेशे की शराफ़त बताई और ख़ुद तिजारत करके उस गिरोह की इज़्ज़त बढ़ाई। क्या आपने यह नहीं फ़रमाया कि "मैं और सच बोलने वाला और ईमानदार ताजिर जन्नत में क़रीब होंगे।"

क्या आपका मज़दूरों पर एहसान नहीं कि आपने ताकीद फ़रमाई कि "मज़दूरों की मज़दूरी पसीना सूखने से पहले दे दो।"

क्या जानवरों पर आपका एहसान नहीं कि आपने फ़रमाया कि "हर मख़लूक़ (प्राणी) जो जिगर रखती है और जिसमें एहसास व ज़िन्दगी है, उसको आराम पहुंचाना और खिलाना–पिलाना भी सदक़ा है।"

क्या सारी इन्सानी बिरादरी पर आपका एहसान नहीं कि रातों को उठ–उठ कर आप शहादत देते थे कि ख़ुदाया! तेरे सब बन्दे भाई–भाई हैं।

क्या सारी दुनिया पर आपका एहसान नहीं कि सबसे पहले दुनिया ने आप (स0अ0व0) ही की ज़बान से सुना कि "ख़ुदा किसी मुल्क, क़ौम, नस्ल, व बिरादरी का नहीं, सारे जहानों और दुनिया के सब इन्सानों का है।"

जिस दुनिया में आर्यों का ख़ुदा, यहूदियों का ख़ुदा, मिस्रियों का ख़ुदा, ईरानियों का ख़ुदा कहा जाता था, वहां "अल्हम्दुलिल्लाहि रब्बिल आलमीन" की हक़ीक़त का ऐलान हुआ और उसको नमाज़ का जुज़ बना दिया गया।

हमारी आपकी दुनिया में हकीम व फ़लसफ़ी भी आए, अदीब व शायर भी, फ़ातेह व विजयी भी, सियासी लीडर और क़ौमी रहनुमा भी, मोजिदीन (अविष्कारक) व साइंसदां भी, मगर किसके आने से दुनिया में वह बहार आई जो पैग़म्बरों के आने से, फिर सबसे आख़िर में सबसे बड़े पैग़म्बर हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह (स0अ0व0) के आने से आई। कौन अपने साथ वह बादशाही, वह बरकतें, वह रहमतें, इन्सानी नस्ल के लिए वह दौलतें और इन्सानियत के लिए वह नेमतें लेकर आया जो मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह (स0अ0व0) लेकर आए। चौदह सौ बरस की इन्सानी तारीख़ पूरे ज़ोर के साथ आप (स0अ0व0) को ख़िताब करके कहती है:

सरसब्ज़ हो जो तेरा पाए माल हो
ठहरे तू जिस शजर के तले वह निहाल हो

(नबव्वत का अतिया: 19–22)

इन्सानियत की सुबह-ए-सादिक़

हज़रत मौलाना सैय्यद मुहम्मद राबे हसनी नदवी (रह0)

रबीउल अव्वल का महीना बहार का महीना है, यही वह महीना है जिससे इन्सानियत की बादे बहार (शीतल वायु) चली, उसकी आमद इन्सान के शर्फ़ व ऐज़ाज़ (मान-सम्मान) और इन्सानियत के इज़्ज़त व इफ़्तिख़ार (गौरव) की याद दिलाती है, हुज़ूर सरवरे कायनात (स0अ0व0) के आने से पहले इन्सानियत अपनी यह इज़्ज़त व इफ़्तिख़ार खो चुकी थी, जिसे रसूलुल्लाह (स0अ0व0) के आने ने दोबारा बहाल किया।

अल्लाह तआला का इन्सानियत पर यह फ़ज़्ल व करम है कि जब इन्सानियत फ़साद व बिगाड़ की आख़िरी हद को पहुंच गई थी और सम्मान व इज़्ज़त से बहुत दूर जा चुकी थी और इन्सान पस्ती व इदबार (दुर्भाग्य) की तह में जानवरों की सी ज़िन्दगी गुज़ार रहा था और वह ऐसा दरिन्दा बन चुका था कि वह दबे-कुचले इन्सानों के साथ वह मामला करता था जो बड़े जानवर छोटे जानवरों के साथ करते हैं, अपने फ़ायदे के लिए दूसरों को कुर्बान कर देता, काम लेते वक़्त बैल की तरह जोतता, लेकिन मज़दूरी न देता और अगर देता भी तो बहुत मामूली जो न के बराबर होती, ज़रा सी नाराज़गी पर रेगिस्तान व सेहरा की नज़र कर देता, मुख़ालिफ़ों को जंगल में जानवरों की खुराक़ बनने के लिए भेज देता, इन्सान का इन्सान के साथ सुलूक इससे और नाक़ाबिले बयान हो चला था जो एक संग दिल इन्सान बेज़ुबान जानवरों के साथ करता है, उससे ज़्यादा संगदिली और बेरहमी की बात और क्या होगी कि मालिक व अमीर जो खुद को आला दर्जे का इन्सान समझते थे, क़ैदियों में जिन्हें वह सज़ा-ए-मौत का मुस्तहिक़ समझते थे, अपनी आला दावतों और खाने की महफ़िलों में बुलाते और उन्हें आग का अलाव बनाकर अपने मुअज़्ज़िज़ मेहमानों की दावत करते कि इसकी रोशनी में वह खाना खाएं, उनके नज़दीक उसकी तकलीफ़ और उसके जलकर राख होने से मेहमान की मेहमाननवाज़ी दोगनी हो जाती थी और तफ़रीह का एक अच्छा सामान हो जाता था।

औरत की हक़ीक़त खिलौने की सी थी और ऐश व इशरत के सामान के जैसी थी, बिना मुंह खोले खिदमत ली जाती, उसको ख़ूब इस्तेमाल किया जाता, हया और इफ़्फ़त (पाकीज़गी) और आबरू का कोई लिहाज़ दोनों तरफ़ नहीं था और यह सबकुछ उस वक़्त था जब वह ज़िन्दा ज़मीन में दफ़न होने से बच जाती।

माल व दौलत कमाने में हर वह तरीक़ा अख़्तियार करना सही समझा जाता था जिससे माल में बढ़ोत्तरी हो, ख़ुशी-नाख़ुशी की कोई परवाह न की जाती थी, सूद, रिश्वत, माल का हड़प लेना, डाका डालना, चोरी, बेईमानी, जिसके बस में होता वह करता।

दीनी व मज़हबी हालत निहायत कमज़ोर थी, वहम व भ्रम और खुराफ़ातों में लोग ज़िन्दगी गुज़ार रहे थे, ग़लत अक़ीदे गढ़ रखे थे, सूरज, चांद, सितारों, पेड़-पौधों, नदियों, जानवरों यहां तक कि कीड़े-मकोड़ों की भी इबादत करते थे और उनका यह अक़ीदा था कि यह नफ़ा पहुचांने वाले और ज़रूरत पूरी करने वाले हैं, इसलिए उनके नुक़सान से बचने के लिए उनकी इबादत ज़रूरी है।

इन हालात में आख़िरी रसूल (स0अ0व0) का दुनिया में आना हुआ, आप (स0अ0व0) ने इन ग़लत अक़ीदों व ख़्यालों की पुरज़ोर काट की और वहशियाना ज़िन्दगी की ज़बरदस्त मुख़ालिफ़त की और ज़ुल्म व फ़साद को ख़त्म किया और इन्सान को उसकी पस्ती (निचली सतह) से उठाया, हक़ की आवाज़ बुलन्द की और फिर उसको लागू करने के लिए खड़े हुए, कुछ ने शुरू ही में साथ दिया, कुछ ज़बरदस्त मुख़ालिफ़त पर उतर आए और उन्होंने आप पर और आपके जाँनिसार सहाबा पर जानलेवा ज़ुल्म किये लेकिन अल्लाह ने और आपके सहाबा ने यह सबकुछ अल्लाह के रास्ते में सहा, जमे रहे और डटे रहे, दावत व तब्लीग़ करते रहे कि हक़ (सत्य) सरबुलन्द हुआ और बातिल (असत्य) का सर झुक गया।

रसूलुल्लाह (स0अ0व0) ने इन्सानियत को उसके ऊंचे मर्तबे पर दोबारा बिठाया, उसको उसके इज़्ज़त व सम्मान की चोटी पर पहुंचाया, अमन व सलामती की डगर पर खड़ा किया, सफ़ाई व पाकीज़गी अता की, सीरत व सुलूक और अख़्लाक़ व सिफ़ात में जमाल व कमाल से सजाया और इस तरह किया कि अल्लाह की मख़्लूक़ की ज़बानें कह उठीं कि इन्सानियत की सुबह-ए-सादिक़ तुलूअ (प्रातःकाल) हुई है।

इस तरह यह महीना अपने साथ एक पैग़ाम रखता है, इस बहार के महीने ने पूरी दुनिया में इन्सानियत की बादे बहारी चला दी।

(सीरते मुहम्मदी-इन्सानियत के लिए आला नमूना: 39-43)

मुअल्लिम-ए-इन्सानियत

صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم

हज़रत मौलाना सैय्यद मुहम्मद वाज़ेह रशीद हसनी नदवी (रह0)

इन्सानी तारीख़ (इतिहास) गवाह है कि रहमतुल–लिल–आलमीन, अमन व मुहब्बत का पैग़ाम लाने वाले, मुअल्लिमे इन्सानियत (मानवता के शिक्षक), सरवर–ए–कौनैन (दोनों जहानों के सरदार) हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा (स0अ0व0) का दुनिया में आना ऐसे फ़ित्ने व फ़साद वाले दौर में हुआ था जिसमें चारों तरफ़ ज़लालत व जिहालत और कुफ़्र व गुमराही का बाज़ार गर्म था, रुश्द व हिदायत और ख़ैर व भलाई की राहें बन्द हो चुकी थीं, तख़्रीबी (विनाशकारी) ताक़तें इन्सानियत से खिलवाड़ कर रही थीं और इन्सान को ईंधन की तरह अपनी ज़ाति ग़रज़ व मक़सद, लालच व हवस और नफ़्स की ख़्वाहिश को पूरा करने के लिए कर रही थीं, इन्सानी व अख़्लाक़ी क़द्रें (मानवीय मूल्य) ज़्यादातर बदल चुकी थीं, पूरी ज़मीन पर इज़्तिराब व इन्तिशार, क़त्ल व लूटपाट, कश्त व ख़ूंरेज़ी, अख़्लाक़ी व दीनी गुमराही और जिन्सी अनारकी (अराजकता) का दौर चल रहा था, इन्सानी ज़मीन मुर्दा हो चुका था, ख़ैर व सलाह और हक़ की आवाज़ ग़ायब थी, हिदायत का चिराग़ गुल हो चुका था, ताक़तवर कमज़ोर को खाए जा रहा था, मालदार ग़रीब का ख़ून पी रहा था और इन्सानियत दम तोड़ रही थी और दूर तक उम्मीद की कोई किरन नज़र नहीं आ रही थी।

इस नाउम्मीदी और मायूसी के आलम में अल्लाह तआला ने रसूल–ए–अकरम सरवर–ए–कायनात हज़रत मुहम्मद (स0अ0व0) को भेजा, तो आप (स0अ0व0) ने इन्सानियत को सहारा दिया, रुश्द व हिदायत का चिराग़ रोशन किया, तहज़ीब व तमद्दुन और इल्म व सख़ावत को तामीरी रुख़ पर लगाया, अमन व सलामती की आवाज़ बुलन्द की, उल्फ़त व मुहब्बत का नग़्मा सुनाया, इल्म की सरपरस्ती की, इन्साफ़ व बराबरी और आपसी भाईचारे का दर्स दिया। इन्सानी तारीख़ गवाह है कि रसूलुल्लाह (स0अ0व0) से बढ़कर इन्सानियत नवाज़ व करम फ़रमाने वाला नहीं देखा और न कोई ऐसी बाकमाल और जामेउस्सिफात शख़्सियत पैदा हो सकी जिसको आपके मुक़ाबले खड़ा किया जा सके और वह आपकी जगह ले सके। अक़्ले इन्सानी अपने तमाम पिछले तर्जुबों, अब के तमाम रिकार्ड और मालूमातों की बुनियाद पर शहादत देती है कि आइन्दा भी किसी ऐसी ज़ात के पैदा होने के इम्कान (संभावना) आख़िरी हद तक ख़त्म हो चुके हैं, यहां तक कि क़यामत बरपा कर दी जाए।

रसूलुल्लाह (स0अ0व0) ने अपने करीम अख़्लाक़, हमदर्दी व ख़ैरख़्वाही और आला दर्जे के इन्सानी किरदार और हुस्ने सुलूक से कट्टर मुख़ालिफ़ीन के दिल जीत लिये। आप (स0अ0व0) सबसे ज़्यादा फ़र्राख़दिल, कुशादा दिल, सीधी बात करने वाले, नर्म तबियत और मुआशरत व मामलात में निहायत दर्जा करीम थे, जो पहली बार आपको देखता वह मरऊब हो जाता, आपकी सोहबत में रहता और जान पहचान हासिल होती तो आप (स0अ0व0) का फ़रेफ़्ता और दिलदादा हो जाता, आप (स0अ0व0) का ज़िक्रे ख़ैर करने वाला कहता है कि न आपसे पहले मैंने आप जैसा कोई शख़्स देखा न आपके बाद। सल्लाहु अलैहि वसल्लम!

नबी–ए–रहमत (स0अ0व0) की पूरी पाक ज़िन्दगी में शफ़क़त व मुहब्बत, नर्मी व मुलात्फ़त, दिलदारी व दिलनवाज़ी, माफ़ी व दरगुज़र और करमगुस्तरी की जलवागरी नज़र आती है। दोस्त तो दोस्त, जानी दुश्मनों के साथ भी नर्मी व मुहब्बत और लुत्फ़ व इनायत का मामला फ़रमाते, दुश्मन जान लेने आते, लेकिन आशिक़े ज़ार बनकर वापस हो जाते, कभी किसी से कोई इन्तिक़ाम नहीं लिया, बल्कि सताने और तकलीफ़ पहुंचाने वालों को माफ़ कर देते और उनके लिए मग़्फ़िरत और हिदायत की दुआ करते।

हक़ीक़त यही है कि हमारी इस आबादगीती में लाखों रहनुमा और क़ायदीन आये और अपने–अपने हिस्से का काम करके चले गए, उनकी फ़ेहरिस्त बड़ी लम्बी है, इनमें मज़हबी रहनुमा भी शामिल हैं और सियासी लीडर भी, ऐसे लीडर भी इसमें शामिल हैं जो ख़ुद को आलमगीर बताते रहे हैं और वह भी शरीके फ़ेहरिस्त हैं जो इलाक़ाई कहलाए गए, उनमें से कोई भी आप (स0अ0व0) का हमपल्ला नहीं, उनमें से किसी के भी क़द व क़ामत पर आप (स0अ0व0) का लिबास फिट नहीं बैठता। (मोहसिन–ए–इन्सानियतः 63–70)

सीरत-ए-नबवी (स०अ०व०) का वसीअ मफ़हूम

मौलाना जाफ़र मसऊद हसनी नदवी

रबीउल अव्वल के मुबारक मौक़े पर मीलादुन्नबी की महफ़िलें सजती हैं, ख़तीबों और वाईज़ों (वक्ताओं) की पुरजोश और वलवला अंगेज़ तक़रीरें होती हैं, नातिया मुशायरों का एहतिमाम होता है और पूरी रात यह सिलसिला जारी रहकर सुबह की अज़ान पर ख़ात्मे को पहुंचता है, लेकिन पूरी रात जागकर जब लोग अपने घरों को लौटते हैं तो वह यह नहीं बता सकते कि हुज़ूरे पाक मुहम्मद (स०अ०व०) की घरेलू और समाजी ज़िन्दगी कैसी थी? वह मेराज का वाक़्या बयान कर सकते हैं, ग़ज़्वा–ए–उहद की तफ़्सील आपके सामने रख सकते हैं, आपके मोजज़ों पर रोशनी डाल सकते हैं, ग़ारे हिरा में आपकी इबादत की मंज़रकशी कर सकते हैं, मक्के से मदीने हिजरत की रूदाद बयान कर सकते हैं, मदीने में होने वाले आपके इस्तेक़बाल का नक़्शा खींच सकते हैं, आपकी ऊंटनी क़स्वा के हज़रत अबू अय्यूब अन्सारी (रज़ि०) के दरवाज़े पर ठहरने का मंज़र बयान कर सकते हैं, लेकिन आपके घरेलू और समाजी ज़िन्दगी के बारे में वह बिल्कुल अनजान और ख़ामोश नज़र आते हैं, हालांकि सीरत पाक का वह पहलू जो घरेलू और समाजी ज़िन्दगी से ताल्लुक़ रखता है, हमारी ज़िन्दगी में बड़ी अहमियत का हामिल है।

इबादतों के मामले में सीरत यक़ीनन हमारी पूरी रहनुमाई करती है, बल्कि इबादत को क़ाबिले क़ुबूल बनाने में सीरत का बुनियादी किरदार है, अगर इबादत में सुन्नतों का ख़्याल न रखा जाए, आपके बताए हुए तरीक़े के मुताबिक़ इबादतों को अंजाम न दिया जाए तो वह इबादत बेरूह और बेजान है। लेकिन...

लेकिन क्या हुज़ूर पाक (स०अ०व०) का सारा वक़्त मस्जिदों में गुज़रा? क्या आप उन ज़रूरतों से मुबर्रा थे जो ज़रूरतें इन्सानी ज़िन्दगी में पेश आती हैं? क्या आप (स०अ०व०) ने अपनी ज़िन्दगी के ज़्यादातर लम्हे ग़ारों, जंगलों और रेगिस्तानों में गुज़ारे जहां इन्सानों से साबक़ा कम पड़ता है? ऐसा होता तो यह आयत बेमानी होकर रह जाती:

"तुम्हारे लिए अल्लाह के रसूल (मुहम्मद स०अ०व०) की ज़िन्दगी में बेहतरीन नमूना है।"

बेशक आपकी ज़िन्दगी में वह तमाम मसले पेश आए जो किसी भी इन्सान को उम्र के किसी भी मरहले में पेश आ सकते हैं। आपका बचपन भी गुज़रा, जवानी भी गुज़री और जवानी के बाद का मरहला भी गुज़रा, बचपन की ख़्वाहिशात, जवानी के तक़ाज़े और जवानी के बाद के मसाएल भी आपको पेश आए। रहन–सहन, ज़िन्दगी गुज़ारने का तरीक़ा और लेन–देन के सिलसिले में भी आपने उम्मत के सामने एक नमूना पेश करके दिखाया।

हम वुज़ू में ख़्याल करते हैं सुन्नतों का, ग़ुस्ल में इहतिमाम करते हैं सुन्नत तरीक़ा अपनाने का, पानी पीते हैं तो कोशिश करते हैं कि बैठ कर पियें, तीन सांसों में पियें, खाने में दायां हाथ इस्तेमाल करते हैं, अपनी प्लेट साफ़ करते हैं, खाने के बाद की दुआ पढ़ते हैं, क्योंकि हमारे प्यारे नबी मुहम्मद (स०अ०व०) ने हमें यह सब बताया, बल्कि हक़ीक़त में करके दिखाया। लेकिन...

लेकिन... क्या हुज़ूर पाक (स०अ०व०) ने सिर्फ़ इन्हीं चीज़ों में हमारी रहनुमाई फ़रमाई जो हमारी इन्फ़िरादी ज़िन्दगी से ताल्लुक़ रखती हैं? और क्या आपने सिर्फ़ उन्हीं चीज़ों के सिलसिले में हमें हिदायतें अता फ़रमाईं जिनको "इबादात" कहा जाता है?!

क्या आप (स०अ०व०) ने घर में रहने के आदाब नहीं बताए? क्या आप (स०अ०व०) ने सड़क पर चलने का तरीक़ा नहीं बयान फ़रमाया? क्या रास्ते में खड़े रहने वालों पर आप (स०अ०व०) ने कुछ ज़िम्मेदारियां नहीं डालीं? क्या पड़ोसियों के साथ हुस्ने सुलूक की तालीम आप (स०अ०व०) ने नहीं दी? क्या रास्ते से तकलीफ़ देने वाली चीज़ों को हटाने को आप (स०अ०व०) ने सदक़ा नहीं क़रार दिया? क्या बीमारी की अयादत की फ़ज़ीलत के सिलसिले में ज़बाने नुबूव्वत ख़ामोश है? क्या

मुसलमान भाई से मुस्कुरा कर मिलना अज्र व सवाब की वजह नहीं है? क्या नर्मदिली, नर्ममिज़ाजी, तवाज़ो और इन्किसारी आप (स0अ0व0) की सिफ़ात में से नहीं है? वालिदैन के साथ हुस्ने सुलूक की ताकीद किसने फ़रमाई? बीवी के हुकूक़ अदा करने पर ज़ोर किसने दिया? यतीमों, मिस्कीनों और बेवाओं की किफ़ालत करने पर बशारत किसने दी? अमानतदार ताजिर के लिए हश्र की गर्मी में अर्श के साये का वादा किसने किया? ग़ीबत, चुग़लख़ोरी, इल्ज़ाम तराशी, ऐबजोई, को बदतरीन गुनाह किसने क़रार दिया? झूठ, ख़यानत और वादा ख़िलाफ़ी को निफ़ाक़ की अलामतों में किसने शुमार किया?

ज़रा सोचिए! आप (स0अ0व0) की ज़िन्दगी में ख़ुशी के लम्हात भी आए और रंज व मलाल के भी, आप (स0अ0व0) ने अपनी चहेती बेटियों को दुल्हन बनाकर रुख़्सत भी किया और अपने लख़्ते जिगर हज़रत इब्राहीम को अपने हाथों क़ब्र में उतारा भी। आप (स0अ0व0) ने मैदाने जंग में इस्लामी लश्कर को आगे बढ़ते हुए भी देखा और पीछे हटते हुए भी। सुलह के वाक़्यात भी आप (स0अ0व0) की ज़िन्दगी में पेश आए और जंग के भी। आप (स0अ0व0) जान छिड़कने वाले सहाबा किराम (रज़ि0) की मुहब्बत भी देखी और ख़ून के प्यासे दुश्मनों की नफ़रत भी देखी। आप (स0अ0व0) दिफ़ाअ भी किया और इक़दाम भी। आप (स0अ0व0) का वास्ता साबिक़ा क़ैदियों से भी पड़ा और ग़ुलामों से भी, शासकों से भी पड़ा और सरदारों से भी, अमीरों से भी पड़ा और ग़रीबों से भी। आप (स0अ0व0) ने ख़ुद भूखे रहकर दूसरों को खिलाने का सबक़ दिया। अपनों को महरूम रखकर ग़रीबों को नवाज़ने का नमूना पेश किया। पसीना सूखने से पहले मज़दूरों को मज़दूरी देने की तलक़ीन की। औरतों के साथ नर्मी बरतने का हुक्म दिया। बहन को विरासत में उसका हिस्सा देने की तलक़ीन फ़रमाई। अमीर (ख़लीफ़ा) की इताअत को लाज़िम क़रार दिया।

आज ज़रूरत इन बातों को बयान करने और इन नमूनों को पेश करने की है।

रसूलुल्लाह (स0अ0व0) की विलादत का वाक़्या

मौलाना अबुल कलाम आज़ाद (रह0)

"यही वाक़्या विलादत-ए-नबवी (स0अ0व0) है जो दावत-ए-इस्लामी के ज़ाहिर होने का पहला दिन और यही माहे रबीउल अव्वल है जिसमें इस उम्मते मुस्लिमा की बुनियाद पड़ी, जिसे तमाम आलम की हिदायत व सआदत का मन्सब अता होने वाला था। यह हिजाज़ के रेगिस्तान की बादशाहत का पहला दिन था। यह अरब के तरक़्क़ी व उरूज के बानी की पैदाइश न थी, यह महज़ क़ौमों की ताक़तों का ऐलान न था, इसमें सिर्फ़ नस्लों और मुल्कों की बुज़ुर्गी की दावत न थी, जैसा कि हमेशा हुआ है और जैसा कुछ कि दुनिया की तमाम तारीख़ का इन्तिहाई सरमाया है, बल्कि यह आलम की रब्बानी बादशाहत का यौम-ए-मीलाद था। यह दुनिया की तरक़्क़ी व उरूज के बानी की पैदाइश थी। यह ज़मीन की सआदत का ज़ुहूर था। यह इन्सानी नस्ल के शर्फ़ व एहतराम का क़यामे आम था। यह इन्सानों की बादशाहतों, क़ौमों की बड़ाइयों और मुल्कों की फ़ुतूहात का नहीं बल्कि ख़ुदा की एक ही और आलमगीर बादशाहत के अर्शी जलाल व जबरूत की आख़िरी और दायमी नमूद थी। पस! यही दिन सबसे बड़ा है, क्योंकि इसी दिन के अन्दर दुनिया की सबसे बड़ी बड़ाई ज़ाहिर हुई। इसकी याद न तो क़ौमों से वाबस्ता है और न नस्लों से बल्कि वह तमाम ज़मीन की एक आम मुश्तरक अज़मत है, जिसको वह उस वक़्त तक नहीं भुला सकती, जब तक उसे सच्चाई और नेकी की ज़रूरत है और जब तक उसकी ज़मीन अपनी ज़िन्दगी और बक़ा के लिए अदालत व सदाक़त की मोहताज है।" (रसूल-ए-रहमतः 737)

तक़्वा क्या है?

सैय्यद बिलाल अब्दुल हयि हसनी नदवी

इज़्ज़त का मेयारः

जब हमारी ज़िन्दगी का ज़ाहिर व बातिन में मुकम्मल तरीक़े पर तक़्वा के सांचे में ढलेगी, तो यह अस्ल इज़्ज़त का मेयार बनेगी और हक़ीक़त में कोई भी हो, इसके लिए अस्ल इज़्ज़त का मेयार यही है। इज़्ज़त का मेयार किसी मदरसे का मोहतमिम होना नहीं, इज़्ज़त का मेयार किसी मन्सब पर फ़ाइज़ होना नहीं, इज़्ज़त का मेयार ज़ाहिरी तौर पर बहुत नमाज़ें पढ़ना नहीं, इज़्ज़त का मेयार ज़ाहिरी दीनदारी नहीं, इज़्ज़त का मेयार हक़ीक़त में कुछ भी नहीं। अस्ल इज़्ज़त का मेयार आदमी की वह ज़िन्दगी है जो तक़्वा के सांचे में ज़ाहिर में ढली हुई हो और बातिन में भी उसकी मुवाफ़क़त पूरी तरह से पायी जाती हो। यह अस्ल है और यही मसावाते इन्सानी में बड़ाई का एक मेयार है, बाक़ी देखा जाए तो तमाम के तमाम इन्सान बराबर हैं, किसी को किसी पर बरतरी नहीं, अगर किसी को बरतरी हासिल है तो वह तक़्वे की बुनियाद पर है, जो तक़्वे में जितना ज़्यादा होगा, वह अल्लाह के यहां भी इज़्ज़त वाला होगा और दुनिया में भी अल्लाह तआला हक़ीक़त में उसको इज़्ज़त अता फ़रमाएंगे, वरना झूठी इज़्ज़तें बहुत हैं और झूठी इज़्ज़तों पर मरने वाले भी बहुत हैं, लेकिन हक़ीक़तें सब खुल जाएंगी, कभी तो दुनिया में खुलेंगी और अगर न भी खुलीं तो आख़िरत में तो उनको खुलना ही है।

दुनिया की हक़ीक़तः

रसूलुल्लाह (स0अ0व0) ने फ़रमाया "दुनिया मीठी और हरी–भरी है।"

इस हदीस में सबसे पहले दुनिया की हक़ीक़त बयान की गई है और यह मिसाल दी गई है कि दुनिया चखने के एतबार से मीठी और देखने के एतबार से हरी–भरी है, बिलाशुब्हा यह एक बेहतरीन मिसाल है। आदमी जब कोई मीठी चीज़ खाता है तो जितनी देर वह मीठी चीज़ मुंह में रहती है, उतनी देर मुंह में मिठास रहती है, लेकिन जब वह पेट के अन्दर चली जाती है तो मुंह में अजीब सा कड़वापन पैदा हो जाता है, गोया वह मिठास बहुत ही महदूद और आरज़ी होती है इसीलिए कभी–कभी जी चाहता है कि जल्दी से पानी वग़ैरह पी ले, या कोई नमकीन चीज़ खा ले ताकि मुंह का मज़ा कुछ ठीक हो जाए। चखने के एतबार से बिल्कुल यही मामला दुनिया का भी है।

इसी तरह देखने के एतबार से हदीस में दुनिया की यह मिसाल दी गई कि दुनिया हरी–भरी है। हरे–भरे का मामला भी ऐसा ही है कि अगर इसको दूर से देखो तो बड़ा ख़ूबसूरत नज़र आता है, लेकिन जब क़रीब जाओ तो पता चलेगा कि इसमें तो कबाड़ भी था। मानो दूर से आदमी को सिर्फ़ हरा–भरा नज़र आता है, अगर दूर से खेतों को देखो तो वह बड़े हरे–भरे नज़र आते हैं, लेकिन जब आदमी उसके अन्दर जाता है तो उसमें कंकड़–पत्थर और कई बार गंदगी नज़र आती है, मानो दूर के ढोल सुहाने थे, जब आदमी अन्दर गया तो हक़ीक़त सामने आ गयी। हरे–भरे के बारे में यह भी एक हक़ीक़त है कि आज जो हरा–भरा नज़र आ रहा है, कल वह बिल्कुल ऐसा भूसा हो जाता है जैसे यहां कुछ था ही नहीं, अगर आप धान या गेहूं वग़ैरह के खेतों को उस वक़्त देखें जब फ़सल आती है तो वह फ़सल बड़ी ख़ूबसूरत लगती है, लेकिन थोड़ा ही अर्सा गुज़रता है कि सब ख़त्म हो जाता है और सूख जाता है, कभी–कभी तो ऐसा ख़त्म होता है कि सब बर्बाद हो जाता है, जिसकी क़ुरआन मजीद में मिसाल भी दी गई हैः

"फिर वह भूसा–भूसा हो जाए, हवांए उसको उड़ाती फिरें।" (सूरह कहफ़: 45)

कई बार ऐसा होता है कि पूरा खेत हरा–भरा होता है, मगर अल्लाह ने एक आंधी चला दी, या आसमान से

ओले गिर गए तो सबकुछ ऐसे ख़त्म हो जाता है, जैसे कभी कुछ था ही नहीं, या कभी–कभी खेती ख़ुश्क़ हो जाती है जो देखने में भी अजीब सी मालूम होती है, या पूरी फ़सल काट दी जाती है और वह भूसा हो जाती है। ठीक यही मिसाल दुनिया की भी है जो वक़्ती तौर पर बहुत हरी–भरी मालूम होती है मगर अल्लाह का एक हुक्म होता है और सब ख़ाक़ हो जाता है।

वाक़्या यह है कि दुनिया पर यह दोनों मिसालें पूरी तरह ऐसी सच साबित होती हैं कि इससे बेहतर मिसालें नहीं हो सकतीं। आदमी दुनिया हासिल करता है और करता चला जाता है, लेकिन जब दुनिया बरतता है तब उसकी हक़ीक़त सामने आती है। यह एक अजीब सी बात है, पहले मरहले में आदमी को दुनिया बड़ी अच्छी लगती है, फिर जब कुछ वक़्त गुज़रता है तो उसकी लज़्ज़त व कैफ़ियत धीरे–धीरे उतनी ही कम होती चली जाती है।

हम इसकी एक मिसाल देते हैं कि अगर आदमी सख़्त गर्मी से पंखे में आए तो उसे लगेगा कि जन्नत में आ गए, लेकिन कुछ वक़्त गुज़रेगा तो लगेगा कि इसकी हवा गर्म है, फिर वह पंखे से कूलर में आ जाए तो उसे लगेगा कि अब जन्नत में आ गए, मगर ज कूलर में कुछ अर्सा गुज़रेगा और उसके बाद वह एसी में आ जाए तो उसको लगेगा कि अब वाक़ई जन्नत में आ गए, अलबत्ता कुछ ही अर्सा गुज़रेगा तो उसको यह एहसास होने लगेगा कि यह कोई भी ख़ास चीज़ नहीं है। यह बिल्कुल तर्जुबे की बात है कि शुरूआत का जो लुत्फ़ है वह बाद में नहीं रहता, बल्कि धीरे–धीरे ख़त्म हो जाता है और यह इसकी एक छोटी सी मिसाल है।

दुनिया की भी बिल्कुल यही सूरतेहाल है कि दुनिया की जितनी राहत की चीज़ें हैं और मज़े की चीज़ें हैं, शुरूआत में आदमी जब उन्हें हासिल करता है तो उसको बड़ा मज़ा आता है, लेकिन बहुत जल्दी वह मर्हला भी आता है कि बहुत सी चीज़ों में तो उसको बहुत शर्मिन्दगी होती है। आदमी को बाज़ चीज़ों के बारे में फ़ौरन समझ में आ जाता है कि यह मज़ा तो बहुत महदूद और मामूली था, जबकि हम उसको बहुत ज़्यादा समझ रहे थे।

ज़हूर–ए–कुद्सी

मौलाना अब्दुल माजिद दरियाबादी (रह0)

"फ़िज़ा–ए–मुल्क बल्कि फ़िज़ा–ए–आलम के इस अंधेरे में यह नौ उम्र यतीम (स0अ0व0) खड़ा होता है और अपनी पाक व पाकीज़ा किताबे ज़िन्दगी के हर वरक़ को खोल–खोल कर रख देता है और अपनी ज़िन्दगी का एक कामिल और मुकम्मल नमूना दुनिया के सामने पेश करके हौसला यह होता है कि दूसरो को भी अपने जैसा बनाया जाए। एक तरफ़ साज़ो सामान से महरूमी है, हर पहलू से बेकसी और बेबसी है, हर एतबार से बेअख़्तियारी है और दूसरी तरफ़ मुल्क व क़ौम की इस्लाह की उमंगे हैं, बल्कि कहना चाहिए कि सारी कायनाते इन्सानी को सुधारने के हौसले हैं, लेकिन "इस्लाहे क़ौम" आजकल के मफ़हूम में नहीं, इसलिए न किसी अंजुमन की बुनियाद पड़ती है, न कोई पार्टी बनाई जाती है, न किसी कमेटी के लिए कोई फ़न्ड खोला जाता है, बल्कि सारा वक़्त और सारी क़ूव्वत अपने आप को तैयार करने में सर्फ़ होती है! यह नौउम्र, हसीन व ख़ुशरो है, नवजवानी का ख़ून उसकी रगों में भी गर्दिश करता है, मुल्क में घर–घर फ़हश व बेहयाई के चर्चे हैं, लेकिन उसकी नीची नज़रों पर ख़ुद हयादारी क़ुर्बान हो–हो जाती है, मयनाब के साग़र हर तरफ़ छलक रहे हैं, पैमाना चारों तरफ़ गर्दिश में है, लेकिन इसके दामने तक़्वा पर फ़रिश्ते तक नमाज़ पढ़ने के आरज़ूमंद हैं। लोग लड़ रहे हैं, यह सुलह करा रहा है। क़ौम छीनने में मसरूफ़ है, यह बांटने में। दुनिया तहसील व फ़राहमी में लगी हुई है और यह अता व बख़्शिश में। आलम मख़्लूक़ मख़्लूक़ परस्ती की लानत में मुब्तिला है, एक उसके दिल में ख़ालिक़ की लौ लगी हुई है।

(ज़िक्रे रसूल, अज़, यतीम का राज)

तलाक़ के चन्द मसाएल

मुफ़्ती राशिद हुसैन नदवी

तहरीर के ज़रिये तलाक़:

तहरीरी तलाक़ या तो औरत को साफ़–साफ़ मुख़ातिब करके बिलाशर्त दी जाएगी, या पहुंचने की शर्त लगाकर दी जाएगी, तो अगर बीवी को साफ़–साफ़ मुख़ातिब करके तलाक़ के अल्फ़ाज़ लिखे जैसे लिखा कि ऐ फ़लाना! तुम्हें तलाक़, या मेरी बीवी को तलाक़, या उसकी बीवी का नाम जैसेः ज़ैनब था, उसने लिखा कि ज़ैनब को तलाक़, तो उन अल्फ़ाज़ के लिखते ही तलाक़ वाक़ेअ हो जाएगी, चाहे यह तहरीर बीवी को पहुंचे या न पहुंचे। लेकिन अगर तहरीर में तलाक़ को पहुंचने पर मुअल्लक़ कर दिया और इस तरह लिखा कि मेरी यह तहरीर पहुंचते ही तुम्हें तलाक़, तो तलाक़ उसी वक़्त वाक़ेअ होगी, जब तहरीर बीवी को मिल जाए, अगर किसी वजह से औरत को तहरीर न मिले तो उसे तलाक़ वाक़ेअ न होगी।

(हिन्दियाः 1/378)

दूसरे की तहरीर पर दस्तख़त से तलाक़:

अगर तलाक़नामा शौहर ने ख़ुद नहीं लिखा, या शौहर या बीवी के किसी वकील या भरोसेमंद ने लिखा और यह तलाक़नामा शौहर को दिया गया और उसने पढ़कर और यह जानकर कि तलाक़ की तहरीर है, किसी जब्र व कराहत के बग़ैर उस पर दस्तख़त कर दिये तो तलाक़ वाक़ेअ हो जाएगी और तलाक़ की तादाद और सिफ़त (बाइन रजई) तहरीर के एतबार से होगी।

(हिन्दियाः 1/379)

जब शौहर तलाक़ से इन्कार करे:

अगर बीवी तहरीर दिखाए कि शौहर ने तलाक़ लिख दी है, लेकिन शौहर कहे कि यह तहरीर मेरी नहीं है, या कहे कि इस पर दस्तख़त मेरे हैं, लेकिन मुझसे यह दस्तावेज़ धोखे से कराये गए थे, तलाक़ की तहरीर बताकर नहीं कराये गए थे, तो तलाक़ वाक़ेअ नहीं होगी।

(हिन्दियाः 1/379)

शौहर ने एक तलाक़ लिखने को कहा और लिखने वाले ने तीन लिख दीं:

किसी ने कहा कि मेरी बीवी को एक तलाक़ लिख दो, उसने तीन तलाक़ लिख दीं, तो अगर शौहर उसको पढ़कर और समझकर दस्तख़त कर दे तो तीनों वाक़ेअ हो जाएंगी और अगर तीन से इन्कार करे तो एक तलाक़ वाक़ेअ होगी।

(बदाएः 1/196)

इकराह (कराहत) के साथ तलाक़:

अहनाफ़ के नज़दीक अगर किसी को मार–पीट की धमकी देकर तलाक़ पर मजबूर कर दिया जाए और उसे मालूम है कि तलाक़ न देने पर वाक़ई में उससे मारपीट करेंगे तो अगर ज़बान से तलाक़ के अल्फ़ाज़ अदा कर दिये तो तलाक़ वाक़ेअ हो जाती है, लेकिन अगर ज़बान से तलाक़ के अल्फ़ाज़ न अदा करे, सिर्फ़ तलाक़ की तहरीर मजबूर करने पर लिखे तो तलाक़ वाक़ेअ नहीं होगी।

(हिन्दियाः 1/379)

जदीद ज़राए अब्लाग़ (मीडिया) के ज़रिये तलाक़ की तहरीर भेजने का हुक्मः

अगर मौजूदा ज़माने के जदीद ज़राए जैसेः ईमेल या फ़ैक्स या मोबाइल मैसेज के ज़रिये शौहर तलाक़ भेजे और शौहर इक़रार करे कि यह तहरीर उसी ने

भेजी है तो तलाक़ जितनी तादाद में दी जाएगी या जिस सिफ़त (रजई बाइन) के साथ दी जाए वाक़ेअ हो जाएगी। (हिन्दियाः 1/378–379)

एक मजलिस की तीन तलाक़ का हुक्मः

पिछली बहसों से वाज़ेह हो गया कि एक मजलिस में तीन तलाक़ लिखना या बोलना गुनाह है, लेकिन इसके बावजूद अगर कोई एक मजलिस में तीन तलाक़ दे दे तो जम्हूर उल्मा इमाम अबू हनीफ़ा, इमाम मालिक, इमाम शाफ़ई और इमाम अहमद बल्कि इस दौर के तमाम उल्मा के नज़दीक तीनों वाक़ेअ हो जाती हैं, अलबत्ता अल्लामा इब्ने तैमिया और इब्नुल क़य्यिम के नज़दीक अगर एक मजलिस में तीन तलाक़ दी जाएं तो एक तलाक़ वाक़ेअ होगी।

(देखिएः शरह मुस्लिमः 1472)

मौजूदा ज़माने में अहले हदीस हज़रात भी इसी मसलक के क़ायल हैं और यह मसला उनके इम्तियाज़ी मसाएल में से एक बन गया है।

(दलाएल और तफ़्सीलात के लिए देखिये राक़िम (लेखक) की किताबः इख़्तिलाफ़ी मसाएल और राहे एतदाल)

यहां हम तीन तलाक़ के चन्द एहकाम लिख रहे हैंः

तीन तलाक़ के हुक्मः

अगर कोई शख़्स अपनी बीवी को तीन तलाक़ें दें तो ख़्वाह जाएज़ तरीक़े के मुताबिक़ अलग–अलग तीन ऐसे तहरों में तीन तलाक़ें दे जिनमें बीवी से दुख़ूल न किया हो, या एक ही तहर में अलग–अलग मजलिसों में एक–एक करके तीन तलाक़ दे, या एक ही मजलिस में तीन अलग–अलग जुम्लों में तीन तलाक़ की नियत से तीन तलाक़ दे और ख़्वाह यह तलाक़ें गुस्से की हालत में दे, या नार्मल हालत में रहते हुए दे, (अगर औरत मदख़ूल बहा है तो) तीनों तलाक़ें वाक़ेअ हो जाएंगी, इस तरह की तलाक़ को "तलाक़–ए–मुग़ल्लज़ा" कहा जाता है, इस तरह की तलाक़ देने के बाद शौहर को न तो रुजूअ का हक़ हासिल होता है, न शरई हलाले के बग़ैर दोबारा निकाह का हक़ हासिल होता है।

(बदाए सनाए, किताबुत्तलाक़, बाब हुक्मुल तलाक़ अलबाइनः 3/295)

चुनान्चे अल्लाह तआला का इरशाद हैः

"तलाक़ तो दो ही मर्तबा है (कि उसमें) या तो दस्तूर के मवाफ़िक़ रोक ले या सुलूक करके रुख़्सत कर दे (इल्ला) फिर अगर वह उसको (तीसरी) तलाक़ दे दे तो इसके बाद इसके लिए वह औरत उस वक़्त तक हलाल नहीं होगी जब तक वह उसके अलावा किसी दूसरे शौहर से ताल्लुक़े निकाह क़ायम नहीं कर लेती।"

(सूरह बक़राः 229–230)

और बुख़ारी में हज़रत आयशा (रज़ि०) से रिवायत है किः

"एक शख़्स ने अपनी बीवी को तीन तलाक़ें दे दीं, तो उसने दूसरे शख़्स से शादी कर ली और उसने तलाक़ दे दी तो नबी करीम (स0अ0व0) से पूछा गया, तो आपने फ़रमाया कि जब तक दूसरा शौहर दुख़ूल न कर ले, यह औरत पहले शौहर के लिए हलाल न होगी।"

(बुख़ारीः किताबुत्तलाक़ : 5261)

दूसरी और तीसरी तलाक़ ताकीदन देनाः

लेकिन अगर किसी शख़्स ने तलाक़ के अल्फ़ाज़ को तीन बार दोहराया, लेकिन उसकी नियत सिर्फ़ एक तलाक़ की थी, दूसरी या तीसरी बार ताकीदन या समझाने के लिए दोहराया तो एक तलाक़ पड़ेगी, लेकिन अगर कहा कि तुम्हें तीन तलाक़ तो उसमें तीनों तलाक़ें पड़ जाएंगी।

(हिन्दियाः 1/355, शामी : 2/492–493)

ग़ैर मद्दख़ूल बहा को तीन तलाक़ः

अगर ग़ैर मदख़ूल बहा को अलग–अलग जुम्लों से तीन तलाक़ दीं तो सिर्फ़ एक तलाक़े बाइन वाक़ेअ होगी, लेकिन अगर उसको एक जुम्ले से इस तरह तलाक़ दी "तुमको तीन तलाक़" तो तीनों वाक़ेअ हो जाएंगी। (शामीः 2/492–493)

सीरत-ए-तैय्यबा का पैग़ाम

अब्दुस्सुब्हान नाख़ुदा नदवी

''बेशक जो लोग ईमान लाए और जो लोग यहूदी हुए और नसारा व साएबीन, जो भी अल्लाह पर और आख़िरत पर ईमान लाया और अच्छे काम किए तो ऐसे कामों का अजर उनके रब के पास है, और उन पर न कोई ख़ौफ़ होगा न यह ग़मगीन होंगे।''

तश्रीह से पहले यह मालूम हो जाए कि यह मुबारक आयत ईमानियात की तफ़सील बताने के लिए नहीं उतरी, इसलिए किसी के ज़हन में यह इश्काल न आए कि इसमें तो अपने–अपने दीन पर रहते हुए अल्लाह और आख़िरत पर ईमान को काफ़ी क़रार दिया गया है। लिहाज़ा रसूलों पर ख़ासकर रसूलुल्लाह (स0अ0व0) पर ईमान ज़रूरी नहीं। हर शख़्स अपने मज़हब के दायरे में रहते हुए अल्लाह और आख़िरत पर ईमान का क़ाएल हो जाए, इसलिए अजर यक़ीनी और जन्नत पक्की है। आयत का सही पसमन्ज़र न समझने से किसी को धोखा हो सकता है। या वहदत–ए–अदयान के क़ाएल लोग इस आयत को उल्टा मतलब पहनाकर किसी को धोखा दे सकता हैं।

इसलिए सबसे पहले यह समझ लें कि यहां ईमानियात की तफ़सील बयान करनी सिरे से मक़सूद ही नहीं, वरना फ़रिश्तों पर, किताबों पर और रसूलों पर ईमान की बात ही नहीं है। मानो इस लिहाज़ से उन पर ईमान एतक़ाद का हिस्सा ही नहीं? इसका कोई भी क़ाएल नहीं है। यहां सिर्फ़ यह बात करना मक़सूद है कि नामों के सहारे किसी जमाअत में शामिल होना हरगिज़ काफ़ी नहीं है। जब तक ईमान की हक़ीक़त नहीं पाई जाएगी तब तक अल्लाह के यहां नजात नहीं मिल सकती है। यहूदी इस ख़तरनाक ग़लती का शिकार हो चुके हैं। लिहाज़ा मुसलमान यह न समझें कि वह भी ईमान वालों के गिरोह में शामिल हो गए तो उनकी नजात यक़ीनी है। नहीं! बल्कि अल्लाह पर सच्चा ईमान और आख़िरत पर पुख़्ता यक़ीन और उसके साथ नेक अमल ज़रूरी है। जब तक यह बुनियाद क़ायम नहीं की जाएगी, कोई चाहे किसी भी गिरोह से कैसी भी निस्बत रखे कुछ फ़ायदा नहीं। नाम अस्ल में उनवान होते हैं। और उनवान हक़ीक़त को उजागर करने के लिए होते हैं। हक़ीक़त की पर्दापोशी के लिए हरगिज़ नहीं। लिहाज़ा जिस ज़माने में सही दीन का जो भी नाम रहा हो इस हक़ीक़त समेत क़ाबिले क़ुबूल है, वरना क़ाबिले रद्द है। यहूदियों का यह अक़ीदा था कि जो यहूदी होगा वह जन्नत में जाएगा और यहूदियों का मतलब सिर्फ़ निस्बते यहूदियत का हासिल करना क़रार पाया। उनकी देखा–देखी नसारा ने भी यही राग अलापना शुरू किया कि जो भी नसरानी निस्बत रखता हो, जन्नत उसके हक़ में साबित, अल्लाह ने दोनों के तसव्वरात पाश–पाश कर दिए;''यहूदियों ने कहाः जन्नत में सिर्फ़ यहूदी जाएंगे, नसारा ने कहाः जन्नत में सिर्फ़ नसारा जाएंगे। (हक़ीक़ते दीन किसी के पास नहीं) यह उनकी ख़ाम ख़्याली है। आप कहिए सुबूत लाओ, अगर तुम सच्चे हो (वह सुबूत यह है) क्यों नहीं जो भी अपना रुख़ अल्लाह के सामने डाल दे (पूरा मुतीअ व फ़रमाबरदार बन जाए) और वह दिल का भी नेक हो, मुख़्लिस हो, तो उसे अपने रब के पास अपना अज्र मिलेगा। ऐसे लोगों पर न ख़ौफ़ होगा, न उनको कोई ग़म लाहक़ होगा।

यहां यह भी बयान करना मक़सूद है कि कहीं यहूद व नसारा की देखा–देखी मुसलमान भी यह कहना शुरू न करें कि जो भी निस्बते इसलाम रखेगा वह जन्नत में जाएगा, जहन्नम उस पर हराम होगी। जिस तरह यहूद व नसारा की बात ग़लत, अहले इस्लाम की भी यह बात ग़लत है। जब तक हक़ीक़ते इस्लाम नहीं पायी जाएगी, जन्नत का हुसूल नामुमकिन है। निस्बते इस्लाम मुनाफ़िक़ीन भी रखते थे लेकिन हक़ीक़ते दीन से महरूम, लिहाज़ा जन्नत तो दूर की बात, जहन्नम के भी सबसे निचले तबक़े में ढकेल दिए जाएंगे। इरशाद हैः ''बेशक मुनाफ़िक़ीन जहन्नम के सबसे निचले तबक़े में पड़े होंगे और तुम उनके लिए कोई मददगार नहीं पाओगे।''

इस मुबारक आयत में दो बुनियादी अक़ाएद बयान किए गए हैं जिनको तस्लीम करने से बक़िया तमाम अक़ाएद का तस्लीम करना और अपनी अमली ज़िन्दगी उसके मुताबिक़ ढ़ालना आसान हो जाता है। "अल्लाह पर ईमान अक़ाएद व तस्दीक़ात की जान है।" गोया तमाम अक़ाएद का लब्बेलुबाब है, अगर सबकुछ हो और अल्लाह की वहदानियत का ही यक़ीन न हो तो फिर किसी चीज़ की न कोई हक़ीक़त, न कोई हैसियत, उसी के तहत फिर

अल्लाह के रसूलों पर ईमान, अल्लाह की किताबों पर ईमान, और अल्लाह के फ़रिश्तों पर ईमान का मामला है। अल्लाह पर ईमान का मतलब ही यह है कि अल्लाह ने जिस रसूल को भेजा है उस पर पूरा ईमान रखा जाए। उसके बिना अल्लाह पर ईमान कैसे पूरा हो सकता है। जबकि वही दुनिया में अल्लाह का नुमाइन्दा है। उससे पहले जितने नबी व रसूल गुज़रे हैं सब पर ईमान लाया जाए लेकिन सबसे आख़िर में जो हस्ती अल्लाह का पैग़ाम ला रही है, उसकी तमाम बातों को जैसे का तैसा तस्लीम किया जाए वरना कोई अगर यह कहे कि रसूल के बिना भी मैं अल्लाह पर ईमान रख सकता हूं और अल्लाह को मान सकता हूं तो उसके दावे का यही मतलब हुआ कि अल्लाह ने फ़िज़ूल (नऊज़बिल्लाह) रसूल को भेजा। और जो एहकामात अल्लाह ने उतारे वह सबके सब बेकार हैं, उनके बिना भी अल्लाह की इताअत व इबादत मुमकिन है। कोई यह कहे कि मैं फ़लां रसूल को तस्लीम करता हूं और उनके ज़रिए अल्लाह ने मुझे जो एहकाम दिए हैं वह मेरे लिए काफ़ी हैं लिहाज़ा मुझे किसी नये नबी की ज़रूरत नहीं, वह भी दरपर्दा अल्लाह पर इल्ज़ाम धर रहा है कि ख़्वाहमख़्वाह फ़लां को भेजने की ज़रूरत क्या थी। साबिक़ा फ़लां नबी और उनकी तालीमात काफ़ी थी। मुझे तो फ़लां की ज़रिए से जो तेरी हिदायतें मिली हैं वह पसंद हैं, और फ़लां के ज़रिए जो हिदायतें मिली हैं उस पर कोई अमल करना चाहे तो करे मैं तो नहीं कर सकता हूं। ज़रा दिल पर हाथ रखकर बताइए कि ऐसे शख़्स को अल्लाह का मुतीअ व फ़रमाबरदार कहा जाएगा या बाग़ी व मुनकिर। उसे कुछ भी कहा जाए अल्लाह का फ़रमाबरदार किसी सूरत में नहीं कहा जा सकता है। अलग–अलग नबियों की बात छोड़ें, एक ही नबी के ज़रिए अल्लाह की तरफ़ दो अलग–अलग वक़्त में दो अलग–अलग हुक्म आएं तो पहले हुक्म को बुनियाद बनाकर अगर कोई बाद के हुक्म को रद्द करता है तो वह भी रद्दे इबादत से बल्कि हद्दे दीन से निकल जाता है। पहले क़िब्ला बैतुल मुक़द्दस था, रसूलुल्लाह (स0अ0व0) ने अल्लाह ही के हुक्म से हिजरत के बाद सोलह या सत्तरह महीने उसकी तरफ़ रुख़ करके नमाज़ें पढ़ीं। फिर हुक्म नाज़िल हुआ कि रुख़ काबातुल्लाह की तरफ़ किया जाए। अब अगर कोई यह कहे कि हमें तो पहला हुक्म पसंद है, दूसरे हुक्म पर हमसे तो अमल नहीं होगा, बल्कि यह हुक्म (ख़ाकिम बदहम) हमें कुछ ग़लत महसूस होता है। तो ऐसा शख़्स क्या अल्लाह पर ईमान रखने वाला क़रार पाएगा। इस तफ़सील से यह मालूम हुआ कि ईमान बिल्लाह का लाज़िमी जुज़ ईमान बिर्रसूल है। इसीलिए अल्लाह की आख़िरी शरीअत के उतरने के बाद अब रसूलुल्लाह (स0अ0व0) मुकम्मल ईमान के बिना अल्लाह पर ईमान का तसव्वुर भी नहीं हो सकता है। इसलिए कुरआन ने बहुत ताकीद के साथ इताअते रसूल को इताअते खुदा का वाहिद बुनियादी ज़रिया क़रार दिया है, जो रसूलुल्लाह (स0अ0व0) की इताअत करता है, उसी ने हक़ीक़त में अल्लाह की इताअत की।

एक जगह तो अल्लाह ने रसूलुल्लाह (स0अ0व0) का नाम लेकर सराहत फ़रमाई ताकि किसी के ज़हन में कोई ग़लत फ़हमी हो तो वह भी ख़त्म हो जाए, इरशाद है कि: "जो लोग ईमान लाए और जिन्होंने अच्छे काम किए और जो रसूलुल्लाह (स0अ0व0) पर नाज़िल शुदा किताब पर ईमान लाए और वही हक़ है उनके रब की तरफ़ से तो अल्लाह ऐसों से उनके गुनाहों को झाड़ देगा और उनकी हालत ठीक कर देगा।"

इन मुबारक आयतों के अलावा कुरआन में बहुत सी जगहों पर ''अल्लाह की इत्तेबा'' के साथ '' रसूलुल्लाह (स0अ0व0) की इत्तेबा'' मन्सबे रिसालत की अहमियत व इत्तेबा–ए–नबी की ज़रूरत बयान करने के लिए काफ़ी है।

ईमानियात की दूसरी बुनियाद ईमान बिल आख़िरत है। जिस तरह अल्लाह पर ईमान तमाम ईमानियात की जान है, उसी तरह ईमान बिल आख़िरत तमाम आमाल की जान है। यह सोच जितनी पुख़्ता होगी कि एक दिन अल्लाह के दरबार में हाज़िर होकर सब हिसाब देना होगा तो फिर ऐसा शख़्स अमली कोताह नहीं बनेगा। बस इस मुबारक आयत में इन दो बुनियादों को बयान करके अक़ाएद व आमाल का सच्चा मेयार पेश करने का हुक्म दिया गया है कि जो भी इस मेयार पर पूरा उतरेगा वह चाहे जो भी रहा हो या उस ज़माने में दीने इस्लाम का उनवान जो भी रहा हो वही अस्ली हिदायत पाया हुआ है जिसके लिए अल्लाह के पास बहुत बड़ा अज्र है और उसे न ख़ौफ़ लाहक़ होगा न ग़म। बाक़ी नामों के सहारे अल्लाह की अदालत में मुक़द्दमा जीतने की ख़्वाहिश एक दिलफ़रेब ख़्वाब के सिवा कुछ नहीं। इरशाद है: ''न तुम्हारी आरज़ुओं की कोई हैसियत, न अहले किताब की तमन्नाओं की कोई हक़ीक़त।''

रहमत-ए-आलम (स0अ0व0) और मज़लूमों की मदद

मौलाना ज़ाहिद हुसैन नदवी जमशेदपुरी

नबी–ए–पाक (स0अ0व0) की ज़िन्दगी नुबूव्वत से पहले भी और नुबूव्वत के बाद भी मज़लूमों की मदद से भरी हुई है और फिर आपके पाक इरशादों में मज़लूमों की मदद करने और उनको सहारा देने की भरपूर फ़ज़ीलत और तरग़ीब मिलती है। याद कीजिए ग़ारे हिरा के उस वाक़्ये को जिसमें पहली मर्तबा आप (स0अ0व0) पर वही नाज़िल हुई और आपको अपनी जान का ख़तरा महसूस हुआ तो आप घर तशरीफ़ लाए और आपने फ़रमायाः "मुझे चादर ओढ़ाओ, मुझे चादर ओढ़ाओ" तो हज़रत ख़दीजा (रज़ि0) ने आप (स0अ0व0) से सुकून वाली बात कहकर आपकी हिम्मत बंधाई थी, इसमें ख़ास तौर पर उन्होंने आपके इन्हीं अख़्लाक़ी और समाजी ख़ूबियों का ज़िक्र किया था जो आपकी ज़िन्दगी की मानो नुमायां और इम्तियाज़ी ख़ूबियां थीं। उन्होंने फ़रमाया कि "हरगिज़ नहीं! अल्लाह तआला आपको कभी भी बेयार व मददगार नहीं छोड़ेगा, क्योंकि आप रिश्तों को जोड़ते हैं, कमज़ोरों का बोझ उठाते हैं, नादारों (ग़रीबों) के लिए कमाने के ज़रिये फ़राहम करते हैं, मेहमान नवाज़ी करते हैं और हक़ के तमाम मौक़ों पर आप मदद में हमेशा आगे–आगे रहते हैं।" (बुख़ारीः 3)

और फिर इसी से मिलती जुलती बात इब्नुल दुग्ना ने आप (स0अ0व0) के ख़लीफ़ा–ए–बरहक़ और आप (स0अ0व0) के जांनिसार व रफ़ीक़े ग़ार हज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ (रज़ि0) के बारे में कही थी, जब उसने आपको हब्शा जाने से रोक दिया था और आप (स0अ0व0) को अपनी पनाह दी थी। (बुख़ारीः 3905)

हिल्फ़ुल फ़ुज़ूलः

रसूलुल्लाह (स0अ0व0) हिल्फ़ुल फ़ुज़ूल में भी शामिल रहे जो अरबों का सबसे शरीफ़ाना और करीमाना मुआहिदा था, इसका क़िस्सा यह था कि ज़बीद का एक शख़्स मक्का में कुछ तिजारत का सामान लेकर आया और कुरैश के एक सरदार आस बिन वाइल ने यह सब सामान ख़रीद लिया, लेकिन उसका हक़ उसको नहीं दिया, ज़बीदी ने कुरैश के सरदारों की हिमायत हासिल करना चाही, लेकिन आस बिन वाइल की हैसियत व वजाहत की वजह से उन्होंने उसका साथ देने से इन्कार कर दिया और खरी–खोटी सुनाकर उसको वापस कर दिया, ज़बीदी ने मक्का वालों से फ़रियाद की और हर बाहौसला, साहिबे हिम्मत और हक़ व इन्साफ़ के हामी शख़्स से जो उसे मिल सका शिकायत की, आख़िरकार उन लोगों में ग़ैरत ने जोश मारा और यह सब लोग अब्दुल्लाह बिन जदआन के मकान पर जमा हुए, उन्होंने उन सबकी दावत व ज़ियाफ़त की, उसके बाद उन्होंने अल्लाह के नाम पर यह अहद व पैमान किया कि सब ज़ालिम के मुक़ाबले और मज़लूम की हिमायत में एक हाथ की तरह रहेंगे और काम करेंगे, जब तक ज़ालिम मज़लूम का हक़ न दे दे, कुरैश ने इस मुआहिदे का नाम "हिल्फ़ुल फ़ुज़ूल" यानि फ़ुज़ूल का मुआहिदा रखा और कहने लगे कि उन्होंने एक फ़ालतू काम में जो उनके फ़राएज़ में नहीं आता दख़लअंदाज़ी की है, फिर सब मिलकर आस बिन वाएल के पास गए और ज़बीदी का साज़ो सामान उनसे ज़बरदस्ती लेकर ज़बीदी को वापस किया।

रसूलुल्लाह (स0अ0व0) इस मुआहिदे से बहुत खुश थे और बेसत के बाद भी आप (स0अ0व0) ने इसकी तारीफ़ व तहसीन की और फ़रमाया कि मैं अब्दुल्लाह इब्ने जदआन के मकान पर एक ऐसे मुआहिदे में शरीक था, जिसमें अगर उसके नाम पर इस्लाम के बाद भी बुलाया जाए तो मैं उसकी तकमील के लिए तैयार हूं, उन्होंने इस पर क्यों मुआहिदा किया था कि वह हक़, हक़दार तक पहुंचाएंगे और यह कि कोई ज़ालिम, मज़लूम पर ग़ल्बा न हासिल कर सकेगा। (सीरत इब्ने कसीरः 1/258, बहवाला नबी–ए–रहमत)

यतीमी का एक सबक़:

मशहूर शामी आलिम डॉक्टर मुस्तुफ़ा सबाई (रह0) सीरत पर दिये हुए अपने क़ीमती मुहाज़रात (लेक्चर) में एक जगह बड़ा ही अहम नुक्ता बयान करते हुए लिखते हैं कि "आपको अल्लाह तआला ने यतीमी की हालत में रखा ताकि आप जान सकें कि यतीम का दर्द और ज़िन्दगी का दुख क्या होता है और आप इस वजह से बचपने ही से

इन्सानियत के आलातरीन माने से आशना हो चुके थे और आपका दिल बचपने ही में यतीमों, ग़रीबों और ज़ुल्म के मारों के हक़ में रहम के जज़्बात से भर गया था और फिर आपकी ज़िन्दगी का बड़ा हिस्सा समाज के उन कमज़ोर तबक़ों को इन्साफ़ दिलाने और उसके साथ नेकी करने और उनके साथ रहमदिली और नर्मी का मामला करने में गुज़रता है।

इसीलिए हर दाई व क़ायद के लिए ज़रूरी है कि उसके दिल में भी इन्सानियत का दुख–दर्द पाया जाता हो ताकि वह कमज़ोरों और बेकसों की मुसीबतों और तकलीफ़ों को महसूस कर सके।

नबी–ए–रहमत के मज़लूम उम्मती:

जहां तक मज़लूमों की बात है तो इस वक़्त पूरी ज़मीन पर सबसे बढ़कर अगर कोई मज़लूमियत से दो–चार हैं तो वह उसी नबी–ए–रहमत के सच्चे उम्मती, हमारे फ़िलिस्तीनी भाई–बहन और मासूम बच्चे हैं। ग़ैर तो ग़ैर हैं, यूनाइटेड नेशन आर्गनाइज़ेश और इन्टरनेशनल कोर्ट ऑफ़ जस्टिस तो हैं ही सारे जियोन्स्टिों के चट्टे–बट्टे, जो अपने कहे और समझे जाते हैं, इस्लामी देश और उनके हुक्मरां वह भी सिवाय ज़बानी जमाख़र्च के ज़मीनी तौर पर कहां साथ दे रहे हैं? इनकी ज़बानें क्यों गूंगी हैं? उनके ज़मीर क्यों मुर्दा हो चुके हैं? आख़िर उनके अन्दर ईमानी ग़ैरत व हमीयत की कोई चमक बाकी भी है या नहीं?

शक होने लगता है, जब हम देखते हैं कि यूरोप की अवाम रोज़ाना सड़कों पर एहतिजाज कर रहे हैं, अमेरिका में जो बाइडेन के सामने जंग बंदी का नारा लगा रहे हैं, इटली के लोग एक फ़िलिस्तीनी झण्डा लहराने वाले बच्चे को बचाने के लिए मर्दानावार फ़ुटबार के ग्राउन्ड में कूद पड़ते हैं, जब वहां की ज़ालिम पुलिस उसे दबोच रही होती है। लेकिन मुसलमान देशों में न कोई मुज़ाहिरा (प्रदर्शन) है और न ही कोई ख़ैर सगाली के जज़्बात और मदद की बात, इल्ला माशाअल्लाह! चंद तन्ज़ीमें हैं जो कुछ अमली तआउन कर रही हैं जैसेः "अल इत्तिहादुल आलमी अल उलमा अल मुसलिमीन" और उसके हिम्मत वाले और बेबाक़ क़ायदीन और चंद उंगलियों पर गिनी जाने वाली शख़्सियतें हैं जो इस ज़वाल के दौर में भी फ़िलिस्तीन के झगड़े को पूरी ताक़त से उठा रही हैं, उम्मत को जगा रही हैं और उनके दुख–दर्द में शरीक होकर अपनी ताक़त भर कोशिश कर रही हैं जैसे पड़ोसी मुल्क में शेखुल इस्लाम हज़रत मौलाना तक़ी उस्मानी साहब दामत बरकातुहुम वग़ैरह।

वरना बाक़ी रहे हम बर्रे सग़ीर के अक्सर उलमा व अवाम, तो हमें तो अपने गिरेबानों में मुंह डालकर ख़ुद से पूछना चाहिए कि मौजूदा सूरते हाल में क्या हमारा मुंह है उस रहमते आलम की तरफ़ अपनी निस्बत करने का? जिससे नमाज़ की हालत में बच्चों के रोने की आवाज़ भी बर्दाश्त नहीं होती थी, जो इन्सान तो इन्सान जानवरों भी पर ज़ुल्म होता हुआ नहीं देख सकता था और एक हम हैं कि इस मज़लूमों के हामी नबी से अपने इश्क़ के दावे के बावजूद हमें अपने फ़िलिस्तीनी भाई–बहनों की पुकार और मासूम व यतीम बच्चों की सिसकियां नहीं सुनाई देतीं, वह तो "ऐ मोअतसिम" की सदा लगाए जा रहे हैं लेकिन कोई नहीं जो उनकी मदद को पहुंचे।

और एहतिजाज व तआउन की बात तो छोड़ दीजिए कि वह अल्लाह और उसके शेरों का काम है, क्या हम अब तक अपनी मुस्लिम अवाम को शऊरी तौर पर फ़िलिस्तीन का मसला समझा भी पाए हैं और यहां के पढ़े लिखे ग़ैरमुस्लिम तबक़े को यह केस सही से बता भी पाए हैं कि भाई! मस्जिदे अक़्सा भी हमारा पहला क़िब्ला–ए–अव्वल और मक्का और मदीना के बाद सबसे "पवित्र तीर्थ स्थान" है और वहां के रहने वाले फ़िलिस्तीनी भी 1948ई0 में यहूदियों के नाजाएज़ क़ब्ज़े के बाद अपने मुल्क की इस तरह आज़ादी और फ़्रीडम की जंग लड़ रहे हैं, जिस तरह हम हिन्दुस्तानियों ने मिलकर हिन्दुस्तान पर अंग्रेज़ों के नाजाएज़ क़ब्ज़े के बाद उनसे लड़े थे? नहीं!

अब तो हमारे फ़िलिस्तीनी भाई साफ़–साफ़ कह रहे हैं कि ऐ अरब हुक्मरानों! तुम्हारे अरबपती और मिलियनर होने से क्या फ़ायदा? तुम तो इन्सानों के लिए एक आर हो आर और पूरी उम्मत से मुख़ातिब होकर कह रहे हैं कि कल क़यामत के दिन तुमसे सवाल किया जाएगा कि जब तुम्हारा क़िब्ला–ए–अव्वल (मस्जिदे अक़्सा) सहयूनियों के क़ब्ज़े में था और उसके मुक़द्दस सहन को ज़्यूनिस्ट हुकूमत के ज़ालिम और जाबिर ओर ख़ूनी दरिन्दे अपने नापाक क़दमों से रौंद रहे थे और उसकी हिफ़ाज़त व दिफ़ाअ के लिए मुजाहिदा करने वाले और क़ुर्बानी देने वाले तुम्हारे मुसलमान भाई–बहन और बच्चे बेदरीग़ अपनी जानें क़ुर्बान कर रहे थे और अपनी शहादतों को नज़राना पेश कर रहे थे तो तुम कहां थे?

सोचिये! कल हश्र का मैदान होगा, अल्लाह का दरबार होगा, नबी के रूबरू फ़िलिस्तीनी बच्चे हमसे यह सवाल करेंगे तो हम क्या जवाब देंगे?!

इश्क़ है प्यारे खेल नहीं है इश्क़ है कारे शीशा व आहन

मेहसिन-ए-इन्सानियत

صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم

मुहम्मद अमीन हसनी नदवी

तारीख़ में महफ़ूज़ शख़्सियतें तो हम–आपको बहुत मिल जाएंगी, लेकिन वह शख़्सियतें जिसके दम से तारीख़ का वजूद हो और तारीख़ को जिस पर सिर्फ़ नाज़ ही नहीं बल्कि तारीख़ का उस पर ईमान हो, वह शख़्सियत एक है–एक है–एक है, और वह शख़्सियत है आक़ा–ए–नामदार, सरवर–ए–कायनात, शाह–ए–दो आलम हज़रत मुहम्मद (स0अ0व0) की।

आप (स0अ0व0) निहायत शफ़ीक़, बड़े मेहरबान और बहुत ही नर्मदिल थे, जब भी दो कामों में से आपको एक काम करने का अख़्तियार दिया जाता तो आप अपनी उम्मत आसानी की ख़ातिर आसान काम को तरजीह देते।

आप (स0अ0व0) की नर्मी, शफ़क़त और मुहब्बत से हर शख़्स वाक़िफ़ था, आपको जो तकलीफ़ पहुंचाता आप उसको हदिया देते, आप (स0अ0व0) कील पूरी ज़िन्दगी उफ़ू व दरगुज़र में गुज़री, आप (स0अ0व0) की रहमत पूरी इन्सानियत के लिए थी।

आप (स0अ0व0) बच्चे उनके मां–बाप से ज़्यादा मेहरबान और उनके मां–बाप से ज़्यादा उन पर शफ़क़त फ़रमाने वाले थे।

ख़ादिमों और गुलामों के साथ जो सुलूक इस्लाम से पहले होता था वह निहायत ही शर्मनाक और ज़ालिमाना था, उस समाज में गुलामों को जानवरों से भी बदतर समझा जाता था और इज़्ज़त के साथ जीने का उन्हें कोई हक़ हासिल न था। आप (स0अ0व0) ने फ़रमायाः जिसके पास भी कोई गुलाम हो तो उसको चाहिए जो ख़ुद खाए वही उसको खिलाए और जो ख़ुद पहने वही उसको पहनाए।

दोस्त व दुश्मन सब ही आपकी रहमत के साये में थे, आपके परवरदिगार ने आपको सारे जहानों के लिए रहमतुल–लिल–आलमीन बनाकर भेजा था और कुरआन करीम को आपकी रहमतुल–लिल–आलमीनी पर गवाह बनाया था, आप (स0अ0व0) तमाम जहानों के लिए रहमत बनाकर भेजे गए थे। बदर के क़ैदी पेश किये जाते हैं, सहाबा किराम (रज़ि0) इशारे के मुन्तज़िर हैं कि गर्दन मारने का हुक्म मिले और वह आगे बढ़कर हुक्म की तामील करें, लेकिन आप (स0अ0व0) उनमें से कुछ को फ़िदिया (अर्थदण्ड) लेकर और कुछ को मुसलमानों की तालीम देने के लिए आज़ाद कर देते हैं।

नबी करीम (स0अ0व0) की रहमत सिर्फ़ इन्सानों की हद तक महदूद न थी बल्कि आपकी रहमत का साया दूर–दूर तक फैला हुआ था, इन्सान तो इन्सान, हैवानात, नबातात, और जमादात तक रहमत के इस घने साये से महरूम न थे, नबी करीम (स0अ0व0) ने जानवर की जान लेने से मना किया, आप (स0अ0व0) ने फ़रमाया कि अगर कोई इन्सान नाहक़ किसी परिन्दे को मारता है तो क़यामत के दिन उससे उस परिन्दे के बारे में पूछा जाएगा।

आप (स0अ0व0) की बेअसत से पहले अरब मुआशरे में औरत को किस नज़र से देखा जाता था और उसके साथ क्या सुलूक किया जाता था, सूरह नह्ल की यह आयत इसकी पूरी तस्वीर खींचकर रख देती हैः

"जब उन्हीं में से किसीक को लड़की की ख़ुशख़बरी दी जाती है तो वह अंदोहनाक हो जाता है और उसका चेहरा स्याह हो जाता है और लोगों से छुपता फिरता है (और सोचता है) कि या तो ज़िल्लत बर्दाश्त करके लड़की को ज़िन्दा रहने दे या ज़मीन में गाड़ दे, देखो यह जो तज्वीज़ करते हैं बहुत बुरी है।"

(सूरह अन्नह्लः 58–59)

लेकिन आप (स0अ0व0) ने औरतों के बारे में फ़रमाया कि सुनो औरतों के साथ अच्छा मामला रखो। (मुत्तफ़क़ अलैहि)

हासिल यह कि हम समाज के इस तबक़े बल्कि ज़िन्दगी के जिस शोबे में भी रहमते आलम (स0अ0व0) की तालीमात और उनकी ज़िन्दगी को देखेंगे तो हमें उसमें आप (स0अ0व0) का उस्वा–ए–हसना ज़रूर मिलेगा और बिलाशुब्हा इससे बढ़कर इन्सानियत पर एहसाने अज़ीम कुछ नहीं हो सकता कि एक नबी–ए–उम्मी ने हर मौक़े और वक़्त की मुनासबत से पूरी इन्सानियत की रहनुमाई फ़रमायी।

खून के प्यासों को इन्सानियत का मीठा पानी

सैय्यद अब्दुल अली हसनी नदवी

ज़ुल्म व सितम और ज़ोर व ज़्यादती का दौर चल रहा था, पूरी ज़मीन का चप्पा–चप्पा पूरी दुनिया के इन्सानों की हैवानियत से आहें भर रहा था, आलमे इन्सानियत से सारी इन्सानी क़द्रें रुख़्सत हो चली थीं, इन्फ़िरादी व इज्तिमाई (व्यक्तिगत व सामूहिक) हक़ के बेरहमी से इस्तेहसाल (शोषण) से हर एक बेचैन व बेबस था, मग़्रिब की अंधेरी नगरी से अरब की उजाड़ चट्टानों तक अफ़्रीक़ा के बेरहम जंगलों से एशिया के मिथकीय देवताओं तक अमावस की रात की एक काली चादर तनी हुई थी, एक तरफ़ रोम व फ़ारस के शाह मुल्कों को जीतने की हवस में लड़खड़ाते फिर रहे थे, हुक्मरां तबक़ा ऐश व इशरत में पड़े हुए थे और अवाम ज़ुल्म की चक्की में पीसी जा रही थी और अख़्लाक़ व किरदार एक पुरानी कहानी बन चुके थे, दूसरी तरफ़ अरब के सूरमा आपस में ही लड़–झगड़ रहे थे, ज़रा–ज़रा सी बात पर तलवारें निकल आती थीं, जंग के मैदान का शोला भड़क उठता था, पलक झपकते ही लाशों के ढेर लग जाते और ख़ून की नदियां बह पड़ती थीं, कमज़ोर व बेसहारा लोग ताक़तवरों के लिए तर निवाला बन चुके थे, औरतें दूसरे माल–असबाब की तरह विरसे में तक़सीम हो जाती थीं और उन पर हर तरह का ज़ुल्म किया जाता था, तहज़ीब का तसव्वुर और समाज के आदाब अरब के क़बीलों से ख़त्म हो चुके थे और जज़ीरा नुमा अरब की पूरी सरज़मीन आपसी कशमकश और ख़ानाजंगियों (गृहयुद्ध) का मैदान बनी हुई थी, सितम करने वालों की ज़्यादतियां व ज़बरदस्तियां, ज़ुल्म व सितम की हौलनाकियां, इब्लीस के पैराकारों की मक्कारियां अपने उरूज पर पहुंच चुकी थीं, यह दुनिया ज़िन्दगी और मौत की कशमकश का सामना कर रही थी, पूरी दुनिया शिर्क व कुफ़्र की आग में झुलस रही थी और हमेशा की जहन्नम की राह पर चल रहा था कि अल्लाह तआला की रहमत जोश में आती है, बातिल (असत्य) के सितारे गर्दिश में चले जाते हैं, ज़ुल्म के शरारे बुझने लगते हैं, क़ैसर व किसरा के महल ज़मींदोज़ हो जाते हैं और मजूसियों व नसरानियों के आस्ताने ख़ाकआलूद, फिर तौहीद और हक़ व सदाक़त का शोर बुलन्द होता है, कलिमा–ए–हक़ की सदाओं से बतला की पहाड़ियां गूंज उठती हैं और तौहीद की यलग़ार के बर्क़ो शरर से कुफ़्र व शिर्क का नशेमन ख़ाक में मिल जाता है, रहमत व मुहब्बत के नग़्में गुनगुनाए जाते हैं, सिसकती इन्सानियत मुस्कुरा उठती है और मोहसिने इन्सानियत, नबी–ए–रहमत, पैग़म्बरे इल्म व अख़्लाक़, मुल्के अरब के मुक़द्दस व मोहतरम शहर मक्का मोअज़्ज़मा में जलवा अफ़रोज़ होते हैं। ज़ुल्म व सितम की मारी हुई इन्सानियत इस ख़ुशख़बरी को पाकर झूम उठती है और ज़ालिमों का गुरूर ख़ाक में मिल जाता है।

रसूलुल्लाह (स0अ0व0) की पूरी ज़िन्दगी रहमत व उल्फ़त, लुत्फ़ व इनायत, हुस्ने ख़ल्क़ और एहसान व मुहब्बत का आईना दिखाने वाली है और आपकी ज़िन्दगी के तमाम लम्हे चमकते हुए चांद व सूरज से ज़्यादा चमकदार हैं, जिनकी किरनों ने काली दुनिया के घटाटोप अंधेरे को ख़त्म किया और ज़ुल्म व जब्र के घने बादलों को तजल्ली–ए–रहमत की किरनों से दूर किया, आपकी ज़िन्दगी का एक–एक वरक़ सफ़ा–ए–हस्ती के लिए निशाने राह है और उन नूर से भरे हुए वरक़ों पर लिखे हुए सुनहरे ख़ुतूत पूरी दुनिया के लिए रोशनी की आख़िरी मंज़िल और नूरे इलाही का आख़िरी जुहूर है।

मोहसिने इन्सानियत की इन्सानियत नवाज़ी और रहमगुस्तरी (रहम का जज़्बा) की अदीमुन्नज़ीर ज़िन्दगी का वह हसीन और दिलनवाज़ दीबाचा है कि

जिसने करोड़ों दिलों की क़सावत को दूर किया और सख़्त गीरों के रुफ़्क व मलाइमत का सबक़ पढ़ाया, आपकी हयाते मुबारका का एक–एक वस्फ़ (ख़ूबी) रहमते इलाही की ताबानियों का मज़हर है और दुनिया के तमाम इन्सानों के लिए मशाल–ए–राह है। आप (स0अ0व0) का सरापा वजूद ज़मान व मकान की तमाम हद व क़ैद से बालातर होकर दोनों जहानों के तमाम इन्सानों व जिन्नातों के लिए बाइसे रहमत है।

अल्लाह तआला का इरशाद है:

"और हमने आपको तमाम जहानों के लिए रहमत बनाकर भेजा है।"

ख़ालिक–ए–कायनात ने आपकी कसीरुज्जिहात (जिन्दगी के अलग–अलग हिस्से) अमली ज़िन्दगी के तमाम सुनहरे पन्ने मुकम्मल सेहत व सच्चाई और दलील के साथ महफ़ूज़ फ़रमाए और कुरआने करीम में आपके बुलन्द अख़्लाक़ व किरदार की शहादत देकर आपके उस्वा–ए–मुबारका को जावदानी बख़्शी, चुनान्चे एक जगह इरशाद हुआः

"और बेशक आप अज़ीमुश्शान अख़्लाक़ व किरदार पर क़ायम हैं।"

और दूसरी जगह सारी इन्सानियत को आप (स0अ0व0) के पाक नमूने के पैरवी की तलक़ीन फ़रमाई, इरशाद हुआः

"बेशक तुम्हारे लिए रसूलुल्लाह (स0अ0व0) की ज़ात में एक बेहतरीन उस्वा है।"

चुनान्चे रसूलुल्लाह (स0अ0व0) की पूरी ज़िन्दगी हुस्ने अख़्लाक़ से सजी हुई कुरआन की तालीमात का हक़ीक़ी और कामिल परतो है, आपकी महबूब ज़ौजा उम्मुल मोमिनीन हज़रत आयशा (रज़ि0) फ़रमाती हैं:

"आपके अख़्लाक़ कुरानी थे।"

बेअसत से पहले भी आप मिसाली किरदार के हामिल और सादिक़ व अमीन शुमार होते थे, चुनान्चे आपकी सिफ़ते एहसान व करम गुस्तरी के बहुत से वाक़्यात नुबूव्वत के पहले भी मन्कूल हैं और नुबूव्वत के बाद तो एक बहरे बेकरां हैं जिससे हर इन्स व जिन्न और चरिन्द व परिन्द सैराब हुआ, इस मुख़्तसर मज़मून में इन वाक़्यात की तफ़सील तो इम्कान से भी ख़ारिज है, अलबत्ता चन्द झलकियां मौजूदा सूरतेहाल में निहायत सबक़आमोज़ हैं।

नुबूव्वत के कमोबेश 20 साल पहले ज़ुल्म व नाइंसाफ़ी के ख़िलाफ़ अरब के क़बीलों का एक शानदार इत्तिहाद होता है, जिसमें आप ख़ुद भी शामिल होते हैं और वाक़्यात की रौ से मालूम होता है कि यह आपकी समाजी ज़िन्दगी का नुक़्ता–ए–आग़ाज़ है।

वाक़्या का खुलासा यह है कि क़बीला बनू ज़ैद के एक साहिबे तिजारत की ग़रज़ से मक्का आए और आस बिन वाएल नामी किसी शख़्स को माल फ़रोख़्त किया, आस ने क़ीमत की अदायगी में टाल–मटोल की तो उस मुसाफ़िर ने अहले मक्का ने दर्द अंगेज़ गुहार लगाई तो मक्का के कुरैश के कुछ नर्मदिल लोग उससे मुतास्सिर हुए बग़ैर न रह सके, तो कुरैश के बहुत से अहम ख़ानदानों ने ज़ुल्म के ख़िलाफ़ कमरबस्ता होने का इरादा किया और एक मुश्तरका महाज़ क़ायम किया गया, जिसमें रसूलुल्लाह (स0अ0व0) भी शरीक रहे और गोकि महाज़ में मुश्रिकीन शामिल थे, लेकिन नुबूव्वत के बाद जब इस्लाम और अहले इस्लाम को ग़ल्बा हासिल हुआ, रुश्द व हिदायत के चिराग़ रोशन हुए और कुफ़्र व ज़लालत की तारीकी काफ़ूर हुई और हक़ व बातिल के माबैन वाज़ेह लकीर खींच दिये गए, तब भी ज़बाने नुबूव्वत ने यही फ़रमायाः

"अगर अब भी मुझे इसकी दावत दी गई तो मैं उसे कुबूल करूंगा।"

ऊपर दिया गया वाक़्या "हिल्फ़ुल फ़िज़ूल" कहलाता है जो हमें सबक़ देता है कि मुश्तरक नासूर के ख़ात्मे के लिए अहले कुफ़्र के साथ कॉमन मिनिमम एजेंडे पर तआउन किया जा सकता है, जो अगर हिकमत व दानाई और मन्सूबा बन्द तौर पर अंजाम दिया जाए तो इस्लामियाने हिन्द के हक़ में दूररस नताएज भी मुरत्तब कर सकता है।

वक़्त का पहिया घूमता है, नबी–ए–बरहक़ अपनी नेक तबियत ज़िन्दगी के पैंतीस बरस पूरे कर चुके हैं, अरब का बियाबान रिसालत की बहारों के इन्तिज़ार में है, इसी बीच अरब के क़बीले एक अजीब कशमकश का शिकार होते हैं, वाक़्या यह है कि मुक़द्दस काबे

की इमारत एक सैलाब से ख़राब हो जाती है, चुनान्चे कुरैश बैतुल्लाह की नई तामीर का फ़ैसला करते हैं और तमाम क़बीले इस ख़ैर के काम में शान व शौकत और इज़्ज़त व वक़ार की ख़ातिर ख़ूब बढ़–चढ़कर हिस्सा लेते हैं, अलबत्ता तामीर के दौरान हजरे असवद को नसब करने के सिलसिले में सख़्त इख़्तिलाफ़ और कशीदगी पैदा हो जाती है और पुराने तरीक़े की तरह तलवारें निकाल ली जाती हैं, लेकिन ख़ुशक़िस्मती की अरब के एक बूढ़े शख़्स उम्मयुल मख़्ज़ूमी एक तजवीज़ पेश करते हैं कि जो शख़्स सबसे पहले हरम में दाख़िल हुआ हो उसे हकम मान लिया जाए, तमाम क़बीले इस तज्वीज़ को मंज़ूर कर लेते हैं, ख़ुदा की मर्ज़ी की सबसे पहले अल्लाह के रसूल (स0अ0व0) हरम के सहन में दाख़िल होते हैं और कुरैश एक साथ पुकार उठते हैं और आपकी सच्चाई, अमानतदारी और मामला फ़हमी की बरमला शहादत देते हैं कि:

"यह अमीन मुहम्मद हैं हम इनसे राज़ी हैं"

आप (स0अ0व0) को झगड़ा बताया जाता है तो आप एक चादर मंगवाते हैं और अपने मुबारक हाथों से हजरे असवद उस पर रख देते हैं और फ़रमाते हैं कि हर क़बीला इसका एक–एक कोना थामकर ले चले फिर ख़ुद से मुक़र्रर जगह पर पत्थर नस्ब फ़रमा देते हैं और इस तरह आपकी हिकमत व दानाई और फ़हम व बसीरत से एक ख़ूनी जंग की बला टलती है।

नुबूव्वत के बाद जब मक्का वालों ने आपकी दावत का इन्कार किया और जान के पीछे पड़ गए तो रसूलुल्लाह (स0अ0व0) ने ताएफ़ का रुख़ फ़रमाया, चटियल पहाड़ों और दुश्वारगुज़ार रास्तों से होते हुए जब आप ताएफ़ पहुंचे तो संगदिल काफ़िरों ने बजाए दावते हक़ पर लब्बैक कहने के शहर के शरपसंद औबाशों को आप के पीछे लगा दिया जो आप पर पत्थर बरसाते, ठट्ठे लगाते और फ़ब्तियां कसते थे, आपके क़दम मुबारक ज़ख़्मों से लहूलुहान थे और आप बारगाहे इलाही में अपनी बेबज़ाअती और नातवानी पर शिकवा कुना थे कि जिब्राईल पहाड़ों के फ़रिश्तों के साथ तश्रीफ़ लाते हैं और कहते हैं कि आप फ़रमाएं तो उन दो पहाड़ों को मिलाकर सरकशों का सुरमा बना दिया जाए, लेकिन इस मौक़े पर सब्र व तहम्मुल का बांध नहीं टूटता, पैमाना नहीं छलकता, बल्कि ज़बाने मुबारक से मुहब्बत व शफ़क़त में गुंधे हुए यह अल्फ़ाज़ निकलते हैं कि

"यह ईमान नहीं लाते, उम्मीद है कि अल्लाह तआला उनकी आइन्दा नस्लों में से किसी को तौहीद का अलमबरदार बना दे।"

ग़ज़्वा–ए–उहद के मौक़े पर ऐन हालते जंग में जब आपका चेहरा ज़ख़्मों से चूर था, दांत मुबारक शहीद कर दिये गए थे और आपकी शहादत की झूठी अफ़वाह फैलाई जा रही थी, तब उन सफ़्फ़ाक दुश्मनों के हक़ में ज़बाने नुबूव्वत दुआगो होती है:

"ऐ मेरे रब! मेरी क़ौम को माफ़ कर दे यह जानते नहीं।"

कुर्बान जाइये!!! हज़ार बार कुर्बान जाइये रहमतुल लिल आलमीन के उफ़ू व दरगुज़र पर कि जफ़ाकार दुश्मन के लिए माफ़ी के तलबगार हैं।

फ़तेह मक्का के मौक़े पर लश्करे इस्लाम पूरे रोब व अदब और शान व शौकत के साथ मक्का में दाख़िल होता है, सामने बरसों पुराना दुश्मन है जिसने माज़ी में दरिन्दगी व हैवानियत का कोई दक़ीक़ा उठा नहीं रखा था, मक्का के शबो रोज़ जिस पर गवाह थे, जांनिसाराने रसूल आंखों के इशारे के इन्तिज़ार में हैं, तलवारें चलाने के लिए बेताब हैं, कुफ़्र का रन कांप रहा है कि जोशे इन्तिक़ाम में एक सहाबी–ए–रसूल की ज़बान से निकलता है:

"आज तो ख़ूंरेज़ी का दिन है।"

लेकिन ज़बाने नुबूव्वत गोया होती है कि नहीं! आज तो रहमत और माफ़ी का दिन है।

फिर ऐलाने आम होता है: "आज तुम पर कोई दारोगीर नहीं है, जाओ तुम सब आज़ाद हो।"

और इस तरह तारीख़ के सफ़े पर माफ़ी व दरगुज़र की एक बेमिसाल व लाज़वाल दास्तान रक़म होती है और फ़िदायाने रसूल के दिलों पर जज़्बा–ए–एहसान व इन्सानियत के अनमिट नुकूश सब्त होते हैं और नबवी अख़्लाक़ की बादे बहारी से ख़िज़ा रसीदा आलमे इन्सानियत गुलो गुलज़ार हो उठता है।

ईद-ए-मीलादुन्नबी का पैग़ाम

हुज़ूर (स०अ०व०) के इस दुनिया में तशरीफ़ लाने के ताल्लुक़ से ख़ुशी का इज़हार हमको हर माहे रबीउल अव्वल में जगह-जगह शानदार तरीक़े से मिलता है। ख़ुशी का यह इज़हार बहुत मुबारक है, जितना भी हो अच्छा है, लेकिन यह और भी ज़्यादा अच्छा हो सकता है, अगर इसमें ख़ुद हमारे आक़ा (स०अ०व०) की भी ख़ुशी का लिहाज़ रखा गया हो, उनकी ख़ुशी उनके मानने वालों की तरफ़ अपनी ख़ुशी बहुत ज़्यादा दिखावा करने से ज़्यादा उन बातों में है जिनसे अल्लाह की मख़्लूक़ को फ़ायदा पहुंचता हो, ग़रीबों और परेशान हाल लोगों की मदद होती हो, बेवाओं और यतीमों को सहारा मिलता हो, उम्मत के लोगों की परेशानियां दूर होती हों, उन कामों पर जहां तक हो सके तवज्जो देना, मुमकिन हद तक अपने माल का कुछ हिस्सा उस पर लगाना, अल्लाह तआला को राज़ी करने वाला और उसके रसूल-ए-महबूब (स०अ०व०) को भी ख़ुश करने वाला काम है। हमारे मालदार हज़रात ईद-ए-मीलादुन्नबी के मौक़े पर अपनी ख़ुशी का इज़हार तो बड़ा ख़र्च करके करते हैं और उनमें कुछ लोग और उनमें कुछ हज़रात ज़रूरतमन्दों और ग़रीबों की मदद भी करते हैं, लेकिन दोनों पहलुओं के दरमियान मुनासिबत को और बेहतर बनाने की ज़रूरत है। रसूलुल्लाह (स०अ०व०) की सिफ़ात में आता है कि ज़रूरतमन्दों का ख़्याल फ़रमाते थे, जिसका काम न हो पा रहा हो उसका काम होने में मदद करते थे, किसी पर मुसीबत पड़ती तो उसकी मुसीबत दूर करने की फ़िक्र करते थे और इन सब बातों का हुक्म भी देते थे। हमको देखना चाहिए कि हम अपने रसूल (स०अ०व०) की मुहब्बत के इज़हार में रसूलुल्लाह (स०अ०व०) की पाक सिफ़त की नक़ल करने में कितना ख़र्च करते हैं और कितनी फ़िक्र अपने रसूल की पैरवी और ख़ुशनूदी के लिए करते हैं, हम अगर जाएज़ा लें तो हमको बड़ी ऊंच-नीच मिलेगी। हम अगर एतदाल (संतुलन) से काम लें तो मुसलमानों की कितनी परेशानियां दूर हो सकती हैं और कितनी ज़रूरतें जिनसे मुसलमानों की उम्मत को बड़ा सहारा मिल सकता है।

हमको ईद-ए-मीलादुन्नबी के ख़ुशी भरे मौक़े पर एतदाल अख़्तियार करने की तरफ़ तवज्जो देना चाहिए, अगर इमारतों को दुल्हन बनाने में कुछ कमी हो जाए और रसूल-ए-मक़बूल (स०अ०व०) की पैरवी और ख़ुशी की फ़िक्र से जन्नत में हमारा महल बन जाए, तो यह ज़्यादा कामयाबी की बात है जिसमें किसी को भी शुब्हा नहीं हो सकता। हुज़ूर (स०अ०व०) की पैरवी और आप (स०अ०व०) की ख़ुशी के काम बहरहाल मुसलमानों के लिए बड़ी कामयाबी की बात है, अल्लाह तआला इसकी तौफ़ीक़ अता फ़रमाए और अपनी मर्ज़ी और अपने रसूल (स०अ०व०) की पैरवी पर चलाए।" (इन्सानियत आज भी उसी दर की मोहताज है: ३७-३८)

सहाफ़ी-ए-इस्लाम हज़रत मौलाना सैय्यद मुहम्मदुल हसनी (रह०)

R.N.I. No.
UPHIN/2009/30527

Monthly
ARAFAT KIRAN
Raebareli

Issue: 09 ❄ September 2024 ❄ Volume: 16

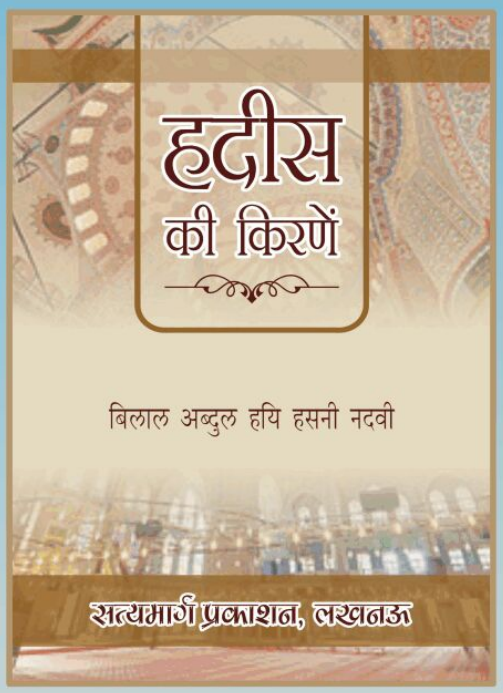

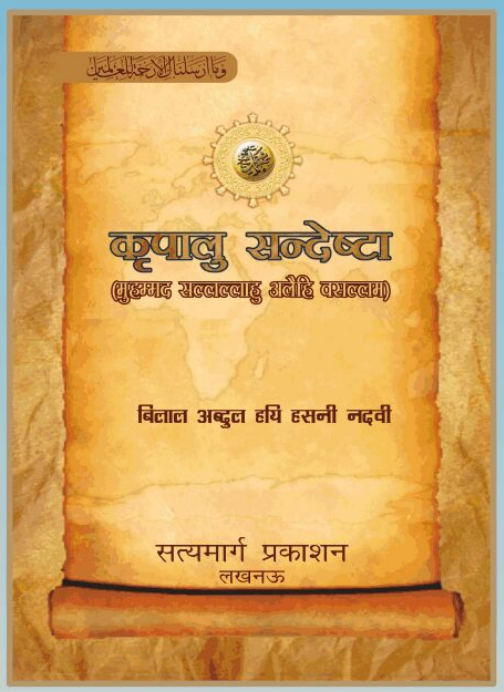

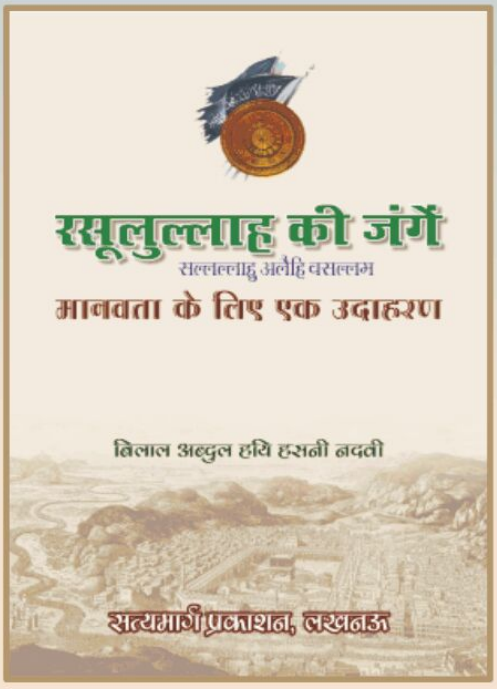

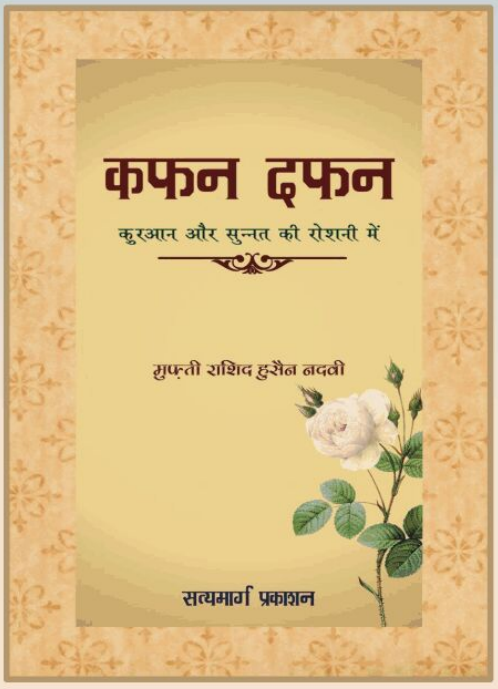

Editor: Bilal Abdul Hai Hasani Nadwi
MARKAZUL IMAM ABIL HASAN AL-NADWI
Dare Arafat, Takiya Kalan, Raebareli, U.P.
Mobile:9565271812
E-Mail: markazulimam@gmail.com
www.abulhasanalinadwi.org

Printed & Published by: Mohammad Hasan Nadwi
On Behalf of: Markazul Imam Abil Hasan Al-Nadwi
Printed at S.A. Offset Printers, Masjid ke peeche,Phatak Abdullah Khan, Sabzi Mandi, Station Road, Raebareli, U.P.